بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक
शेख मुजाहिदअहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

वर्ष- 11
अंक -15

Postal Reg. No.GDP -45/2026-2028

20 ज़ुल-कादा 1447 हिज्री कमरी, 09- शवाल 1405 हिज्री शम्सी, 09 अप्रैल 2026 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

وَيُطۡعِمُوۡنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسۡكِيۡنًا وَّيَتِيۡمًا وَّاَسِيۡرًا ۝ اِنَّمَا نُطۡعِمُكُمۡ لِوَجۡهِ اللّٰهِ لَا نُرِيۡدُ مِنۡكُمۡ جَزَآءً وَّلَا شُكُوۡرًا ۝ ﴿سُوۡرَۃُ الدَّھۡر: 10-9﴾

अनुवाद: और वे लोग भोजन को, स्वयं उसकी इच्छा रखते हुए भी, निर्धनों, अनाथों और बंदियों को खिलाते हैं। (और कहते हैं) हम तुम्हें केवल खुदा तआला की प्रसन्नता के लिए खिला रहे हैं, हम तुमसे न कोई प्रतिफल चाहते हैं और न ही कोई धन्यवाद।

खुदा की मख़लूक़ की सेवा, खुदा की इबादत है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि खुदा तआला क़ियामत के दिन कहेगा: ऐ इब्न-ए-आदम! मैं बीमार हुआ था, तूने मेरी ख़ैर-ख़बर नहीं ली। इस पर वह उत्तर देगा: तू तो रब्बुल आलमीन है, तू कैसे बीमार हो सकता है, और मैं तेरी ख़ैर-ख़बर किस प्रकार लेता? खुदा तआला फ़रमाएगा: क्या तुझे मालूम नहीं था कि मेरा फलाँ बंदा बीमार था और तू उसकी ख़ैर-ख़बर लेने नहीं गया था? क्या तुझे यह समझ नहीं आई कि यदि तू उसकी ख़ैर-ख़बर लेता, तो तू मुझे उसके पास पाता, और उसकी ख़ैर-ख़बर लेना ही मेरी ख़ैर-ख़बर लेना होता।

ऐ इब्न-ए-आदम! मैंने तुझसे खाना माँगा, मगर तूने मुझे खाना नहीं खिलाया। वह कहेगा: ऐ मेरे रब! तू तो रब्बुल आलमीन है, खाने से बेनियाज़ है, मैं तुझे कैसे खाना खिलाता? खुदा तआला फ़रमाएगा: क्या तुझे यह मालूम नहीं था कि मेरे फलाँ बंदे ने तुझसे खाना माँगा था और तूने उसे खाना नहीं खिलाया? क्या तुझे यह समझ नहीं आई कि यदि तू उसे खाना खिलाता, तो मानो तूने मुझे ही खाना खिलाया होता।

ऐ इब्न-ए-आदम! मैंने तुझसे पानी माँगा, लेकिन तूने मुझे पानी नहीं पिलाया। वह कहेगा: ऐ मेरे रब! तू तो रब्बुल आलमीन है, प्यास से बेनियाज़ है, मैं तुझे कैसे पानी पिलाता? खुदा तआला फ़रमाएगा: मेरे बंदे ने तुझसे पानी माँगा था, तूने उसे पानी नहीं पिलाया। क्या तुझे यह समझ नहीं आई कि यदि तू उसे पानी पिलाता, तो मानो तूने मुझे पानी पिलाया होता, और उसका सवाब मैं तुझे देता।

(मुस्लिम, किताब अल-बिर्र वस्सिला, बाब फ़ज़्ल अयादतिल मरीज़, संदर्भ: हदीक़तुस्सालिहीन, हदीस संख्या 583)

मोमिन वे हैं जो खुदा की मुहब्बत में निर्धनों, अनाथों और बंदियों को भोजन कराते हैं।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

"तआम" कहते ही पसंदीदा भोजन को कहते हैं, सड़ा हुआ या बासी भोजन "तआम" नहीं कहलाता। अतः यदि उस थाली में से, जिसमें अभी ताज़ा, स्वादिष्ट और पसंदीदा भोजन रखा हुआ है और जिससे अभी खाना शुरू भी नहीं किया गया, किसी गरीब की पुकार पर निकालकर दे दिया जाए, तो यह वास्तविक नेकी है। बेकार और निकम्मी चीज़ों को खर्च करके कोई व्यक्ति नेकी करने का दावा नहीं कर सकता। नेकी का दरवाज़ा संकीर्ण है। इसलिए यह बात अच्छी तरह समझ लो कि निकम्मी चीज़ों को ख़र्च करने से कोई उसमें[1] प्रवेश नहीं कर सकता।

(रिपोर्ट जलसा सालाना 1897 ई., पृष्ठ 79)

अच्छे आचरण के साथ, अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान देना भी अपनाओ।

"युत्इमूनत्तआम अला हुब्बिही मिस्कीनं व यतीमं व असीरं" आदि, अर्थात वे खुदा तआला की प्रसन्नता के लिए निर्धनों, अनाथों और बंदियों को भोजन कराते हैं और कहते हैं कि हम केवल खुदा तआला की प्रसन्नता के लिए देते हैं और हम उस दिन से डरते हैं जो अत्यंत ही भयावह है।

(अल-हकम, खंड 5, संख्या 27, दिनांक 24 जुलाई 1901 ई., पृष्ठ 2)

मोमिन वे होते हैं जो खुदा की मुहब्बत में निर्धनों, अनाथों और बंदियों को भोजन कराते हैं और उनसे कहते हैं कि हम तुम्हें केवल खुदा की मुहब्बत और उसकी प्रसन्नता के लिए देते हैं। हम तुमसे न कोई बदला चाहते हैं और न कोई धन्यवाद।

(सिराजुद्दीन ईसाई के चार सवालों का जवाब, पृष्ठ 42)

(संदर्भ: तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, खंड संख्या 3, तफ़सीर सूरह अद-दहर, पृष्ठ 282-281)

तफ़सीर-ए-कबीर से अंश

यदि मनुष्य के भीतर अनाथों और निर्धनों के प्रति सच्चा प्रेम होता, तो वह भूख के दिनों में उन्हें भोजन कराता

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरह अल-बलद की आयत "औ इत्आमुन फी यौमिन् ज़ी मसग़बतिन * यतीमन ज़ा मक़रबतिन * औ मिस्कीनन ज़ा मतरबतिन ......" की तफ़सीर करते हुए फ़रमाते हैं:

यदि उस (मनुष्य) के भीतर अनाथों और निर्धनों के प्रति वास्तविक प्रेम होता और वह उनकी पीड़ाओं को दूर करने का सही एहसास अपने अंदर रखता, तो उसका कर्तव्य था कि वह भूख के दिनों में उन्हें भोजन कराता। अर्थात अकाल के समय उनकी खबर-ख़ैर लेता या गरीबी और भुखमरी के समय उनके लिए अनाज आदि की व्यवस्था करता। यह मान भी लिया जाए कि वह प्रतिदिन सैकड़ों ऊँट ज़बह करता रहा है, तो भी हम यह कहते हैं कि उसने उन्हें अनुचित समय पर ज़बह किया। उन्हें ज़बह करने का उचित अवसर यह था कि वह उन्हें अनाथों और निर्धनों के लिए ज़बह करता और उनका मांस उनमें बाँट देता, या स्वयं पकाकर उन्हें बुलाकर उनकी भूख दूर करता।

यहाँ "फी यौमिन् ज़ी मसग़बतिन" (भूख के दिन) के शब्द इसी उद्देश्य से लाए गए हैं कि पहले यह उल्लेख आ चुका था कि वह व्यक्ति नाम और दिखावे के लिए, प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि पाने के लिए अपना धन खर्च करता है। इससे यह विचार उत्पन्न हो सकता था कि संभव है वह अनाथों और निर्धनों को भी भोजन करा देता हो। खुदा तआला ने इस संदेह को दूर किया है और बताया है कि

शेष 9 पर

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

जहाँ न्याय नहीं होता, वहाँ फिर तबाही आती है। उम्मत-ए-मुस्लिम के लिए और दुनिया के अमन के लिए दुआ करें!
मौजूदा अमेरिका-ईरान युद्ध के संदर्भ में हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला की दुनिया वालों के लिए दर्द भरी नसीहतें

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने ख़ुत्बा जुमा दिनांक 6 मार्च 2026 में ईरान-अमेरिका युद्ध के बारे में चिंता व्यक्त करते हुए दुनिया में जल्द अमन स्थापित होने के लिए दर्द भरी नसीहतें कीं। आपने फ़रमाया: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जो पैग़ाम लेकर आए, उसका मकसद एक खुदा तआला पर ईमान लाना, उसकी इबादत करना, उसकी तौहीद को स्थापित करना और उसके लिए प्रयास करना तथा उसके बंदों के हक़ अदा करने की कोशिश करना है। फिर एक उम्मत बनकर आपस में भाई-भाई बनकर रहना है।

लेकिन आज इस दावे के बावजूद कि हम कलमा पढ़ने वाले हैं, हम एक नहीं हैं। हमारे कर्म वह नहीं हैं जिन शिक्षाओं का हम दावा करते हैं। नतीजा यह है कि जब हम इस्लामी दुनिया का जायजा लेते हैं तो हालत बहुत चिंताजनक है। कुछ देशों के पास प्राकृतिक संसाधन और दौलत है, लेकिन इसके बावजूद दुनिया की ताकतों के सामने उनका कोई खास स्थान नहीं है और न ही दीन की तरक्की के लिए उनका कोई विशेष योगदान है, और न ही इस्लामी शिक्षाओं पर अमल करने की कोई खास कोशिश दिखाई देती है। इसका नतीजा साफ है कि गैर लोग इस स्थिति का फायदा उठाते हैं।

मुसलमानों को चाहिए कि एक उम्मत के रूप में एक होने की कोशिश करें और इसके लिए पूरी मेहनत करें। अगर ऐसा होगा तभी हम दुनिया के हमलों से बच सकेंगे, अपना सम्मान कायम रख सकेंगे और इस्लाम विरोधी ताकतों को हमें अंदर से तोड़ने से रोक सकेंगे।

इसके लिए हमें यह भी सोचना होगा कि खुदा तआला ने इस समय इसके लिए क्या प्रबंध किया है। खुदा तआला ने इस उद्देश्य के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और महदी माहूद को भेजा है।

दुनिया के हालात के बारे में मैं काफी समय से कह रहा हूँ कि यूरोप के देश तो बिगड़ते हालात की वजह बनेंगे ही, लेकिन इस्लामी देश भी इस फसाद में अपना हिस्सा डाल रहे हैं।

पश्चिमी ताकतों ने पहले इस्लामी देशों को आपस में लड़ाया और अब उनके संसाधनों पर कब्जा करने के लिए लगातार कोशिश कर रहे हैं। मुसलमानों को यह बात समझनी चाहिए कि ये दज्जाली ताकतें कभी भी मुसलमानों को एकजुट होकर रहते नहीं देख सकतीं। उनका असली एजेंडा यही है कि मुसलमानों में हमेशा फसाद पैदा किया जाए।

हमारा काम यह है कि आज दुआ के जरिए खुदा के सामने झुकें और मुस्लिम दुनिया के लिए बहुत दुआ करें।

अमेरिका ने कई इस्लामी देशों में अपने सैन्य अड्डे स्थापित किए हुए हैं, लेकिन किस लिए? क्या इन देशों की रक्षा के लिए? आखिर इन अरब देशों को किससे खतरा था? इन ताकतों ने खुद खतरे पैदा किए और फिर मुस्लिम देशों को यह समझाया कि तुम्हें खतरा है, इसलिए तुम्हारी सुरक्षा के लिए यह व्यवस्था की जा रही है। जिनसे वास्तव में मुस्लिम देशों को खतरा है, उनके खिलाफ ये सैन्य अड्डे कभी इस्तेमाल नहीं होंगे।

ईरान तो हमेशा ही इन देशों को खटकता रहा है। इज़राइल के खिलाफ ईरान की नीति अधिक सख्त थी, अन्य इस्लामी देशों से विचारों का मतभेद भी था। इन सब बातों का इन वैश्विक ताकतों ने फायदा उठाया और इस क्षेत्र में अपनी मौजूदगी सुनिश्चित कर ली। इन अड्डों की वजह से ही अरब देशों पर हमले का खतरा बना और हमले हुए, जिनसे उनकी अर्थव्यवस्था तबाह हुई। इस स्थिति का फायदा उन्हीं वैश्विक ताकतों को हुआ और आगे भी होगा।

हज़रत खलीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने इराक युद्ध के दौरान कहा था कि यह फसाद अब बढ़ता जाएगा। काश! मुस्लिम देश इससे सबक लेते।

यह अशांति इन्हीं वैश्विक ताकतों की फैलायी हुई है और जाहिर तौर पर इसके रुकने की कोई संभावना नजर नहीं आती, सिवाय इसके कि खुदा तआला की कोई विशेष तकदीर हो। इसके लिए उन्हें भी प्रयास करना होगा और हमें इसके लिए दुआ भी करनी चाहिए।

यह अत्याचार जिस तरह दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है, उससे लगता है कि बड़े पैमाने पर विश्व युद्ध होगा। बल्कि कुछ पश्चिमी टिप्पणीकारों के अनुसार तो विश्व युद्ध शुरू हो चुका है। मैं भी यही कहता हूँ कि यह शुरू हो चुका है। लेकिन अभी भी अगर मुस्लिम दुनिया समझदारी से काम ले, तो यह दज्जाल के फितने से बच सकती है।

मध्य पूर्व में जो युद्ध हो रहा है, कहने को तो यह अमेरिका ने ईरान पर हमला करके शुरू किया है, लेकिन ईरान ने पहले चेतावनी दी थी कि अगर उस पर हमला हुआ तो वह अरब देशों में बने अमेरिकी अड्डों पर हमला करेगा, और ऐसा ही हुआ। ये लोग रेजीम चेंज का नारा लगाते थे, लेकिन क्या हासिल हुआ? खामनई साहब को तो शहादत का दर्जा मिल गया और उनकी इज्जत और बढ़ गई। उनके पूरे परिवार को मार दिया गया, लेकिन इससे रेजीम चेंज नहीं हुई, बल्कि उनकी कौम और ज्यादा एकजुट हो गई।

मध्य पूर्व के अरब देशों में रक्षा शक्ति नहीं है, उनका पूरा निर्भर पश्चिमी ताकतों पर है। यह युद्ध अब भयानक रूप ले चुका है।

अरब देशों को जहां एक तरफ तेल के कुएं बंद होने से नुकसान हो रहा है और महंगाई बढ़ रही है, वहीं उन्हें इस युद्ध में अमेरिकी रक्षा सहायता का खर्च भी उठाना पड़ेगा। इससे उनकी अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान होगा।

अमेरिकी राष्ट्रपति पिछली अमेरिकी सरकारों की नीति पर ही चल रहे हैं। यह कोई नई नीति नहीं है, बल्कि लंबे समय से यही नीति रही है कि जहां मन चाहे उस क्षेत्र के संसाधनों पर कब्जा करो और उसका कोई भी कारण पेश कर दो। जो देश उनके साथ न हो, उसके खिलाफ दबाव और धमकी का इस्तेमाल किया जाता है।

जहाँ न्याय नहीं होता, वहाँ फिर तबाही आती है। इन ताकतों ने सैकड़ों बच्चों और मासूमों को मार दिया। यह कैसी लड़ाई है जिसमें बच्चों के स्कूलों पर बमबारी की जा रही है और कोई पूछने वाला नहीं है।

इस्लाम तौहीद की स्थापना के लिए आया था और इसी उद्देश्य के लिए मुस्लिम देशों को प्रयास करना चाहिए और एकजुट होना चाहिए। इन शक्तिशाली देशों को अपना खुदा तआला न समझें, वरना ये देश एक-एक करके सभी इस्लामी देशों और उनके संसाधनों पर कब्जा कर लेंगे।

क़ुरआन-ए-करीम ने मुसलमानों को स्पष्ट निर्देश दिया है कि यदि मोमिनों के दो समूह आपस में लड़ पड़ें तो उनके बीच सुलह करा दो। फिर यदि सुलह के बाद उनमें से कोई दूसरे पर हमला करे तो हमलावर के खिलाफ सब मिलकर लड़ो, यहाँ तक कि वह खुदा तआला के आदेश की ओर लौट आए। और जब वह लौट आए तो न्याय के साथ दोनों के बीच सुलह करा दो।

यह वह आदेश है जो दुनिया के अमन के लिए भी आवश्यक है और मुसलमानों के लिए तो इसकी अहमियत और भी ज्यादा है, क्योंकि खुदा तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में यह निर्देश दिया है। सुलह कराते समय अपने व्यक्तिगत लाभ नहीं देखने चाहिए, बल्कि असली समस्या का समाधान करना चाहिए। पाकिस्तान और कुछ अन्य देशों, जिनमें चीन आदि शामिल हैं, ने सुलह कराने की पेशकश की है। ईरान सहित अरब देशों को इस पर ध्यान देना चाहिए।

हमारा काम यही है कि दुआ करें और रमज़ान में केवल अपनी व्यक्तिगत जरूरतों के लिए ही दुआ न करें, बल्कि उम्मत-ए-मुस्लिम और दुनिया के अमन के लिए भी दुआ करें। अगर खुदा तआला मुझे यह अधिकार दे कि तन्हाई (एकांत) और लोगों के बीच रहने में से तुम किसे पसंद करते हो, तो उस पवित्र सत्ता की कसम, मैं तन्हाई को ही चुनूँगा। मुझे तो खींच-खींच कर मैदान-ए-अमल में निकाला गया है। जो आनंद मुझे एकांत में मिलता है, उसे खुदा तआला के सिवा कौन जान सकता है। मैं लगभग पच्चीस वर्ष तक एकांत में बैठा रहा हूँ और कभी एक क्षण के लिए भी यह इच्छा नहीं की कि प्रसिद्धि के दरबार की कुर्सी पर बैठूँ। मुझे स्वभाव से ही लोगों में मिलकर बैठने से घृणा रही है, लेकिन आदेश देने वाले के हुक्म से मजबूर हूँ।

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

हमेशा याद रखना चाहिए कि वास्तविक लाभ तभी होता है जब रमज़ान के बाद भी हम खुदा तआला की मुहब्बत और इबादत के स्तर को बनाए रखें, बल्कि उसे बढ़ाने की कोशिश करें। तभी हम अपने पैदा होने के उद्देश्य को पूरा करने वाले होंगे।

जो घटनाएँ मैं बयान करूँगा या करता रहा हूँ, हम में से हर एक को चाहिए कि अपनी आध्यात्मिक स्थिति को बेहतर बनाने और उसका मूल्यांकन करने के लिए उन्हें अपने सामने रखे और कोशिश करता रहे कि हम उन बातों और कर्मों पर भी अमल करें जो हमारे आका हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अगर खुदा तआला मुझे यह अधिकार दे कि तन्हाई (एकांत) और लोगों के बीच रहने में से तुम किसे पसंद करते हो, तो उस पवित्र सत्ता की कसम, मैं तन्हाई को ही चुनूँगा। मुझे तो खींच-खींच कर मैदान-ए-अमल में निकाला गया है। जो आनंद मुझे एकांत में मिलता है, उसे खुदा तआला के सिवा कौन जान सकता है। मैं लगभग पच्चीस वर्ष तक एकांत में बैठा रहा हूँ और कभी एक क्षण के लिए भी यह इच्छा नहीं की कि प्रसिद्धि के दरबार की कुर्सी पर बैठूँ। मुझे स्वभाव से ही लोगों में मिलकर बैठने से घृणा रही है, लेकिन आदेश देने वाले के हुक्म से मजबूर हूँ। (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

हमेशा याद रखना चाहिए कि वास्तविक लाभ तभी होता है जब रमज़ान के बाद भी हम खुदा तआला की मुहब्बत और इबादत के स्तर को बनाए रखें, बल्कि उसे बढ़ाने की कोशिश करें। तभी हम अपने पैदा होने के उद्देश्य को पूरा करने वाले होंगे।

जो घटनाएँ मैं बयान करूँगा या करता रहा हूँ, हम में से हर एक को चाहिए कि अपनी आध्यात्मिक स्थिति को बेहतर बनाने और उसका मूल्यांकन करने के लिए उन्हें अपने सामने रखे और कोशिश करता रहे कि हम उन बातों और कर्मों पर भी अमल करें जो हमारे आका हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके सच्चे सेवक के इबादत के तरीके थे या जिनका उनका खुदा तआला से संबंध था। केवल यह न हो कि हम इन घटनाओं को सुनें और आनंद लें, बल्कि ये हमारे लिए मार्गदर्शक बननी चाहिए।

मनुष्य को चाहिए कि हर समय खुदा तआला से डरता रहे और पाँच वक्त उसकी हाज़िरी में दुआ करता रहे। (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

(यौम मसलिह मौऊद) के जलसे भी आजकल जमात में हो रहे हैं और इससे इतिहास का भी पता चलता है। एम टी ए पर भी कार्यक्रम आ रहे हैं। उनसे भी जानकारी मिलती है। इन्हें देखना चाहिए।

मनुष्य को हमेशा अपने अच्छे अंजाम के लिए दुआ और अपने ईमान की मजबूती के लिए प्रयास करते रहना चाहिए और इसके लिए दुआ भी मांगनी चाहिए। और विशेष रूप से रमज़ान में की जाने वाली दुआओं में यह दुआ भी हर एक को करनी चाहिए कि खुदा तआला हमारा अंजाम अच्छा करे और हमें ईमान में मजबूत रखे।

रात की पहरेदारी के दौरान हम हज़रत साहब के कैंप के पास से गुजरते और हुज़ूर अलैहिस्सलाम को नमाज़ में ही व्यस्त देखते। खुदा जाने आप कब सोते होंगे। (एक रिवायत)

हुज़ूर अलैहिस्सलाम तहज्जुद की नमाज़ें बड़े विनम्र भाव से पढ़ा करते थे। इसलिए छोटी मस्जिद के साथ वाले कमरे में भी आपकी आवाज़ सुनाई देती थी। आपका यह नियमित तरीका था कि "اِھۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ" को बार-बार दोहराते थे। (एक रिवायत)

आजकल हम रमज़ान के दिनों से गुजर रहे हैं और तहज्जुद की कुछ न कुछ तौफ़ीक मिल ही जाती है। अगर नहीं भी मिलती तो कोशिश करनी चाहिए। निस्संदेह मस्जिद में तरावीह पढ़ाई जाती है और यह कमजोरों, बीमारों या ऐसे लोगों के लिए विकल्प के रूप में होती है जो सुबह सही समय पर उठ नहीं सकते या अधिक समय नहीं दे सकते। लेकिन यह ऐसा विकल्प नहीं है जो पूरा हक अदा कर सके। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत और आपके सच्चे सेवक का तरीका यही है कि रात को उठकर तहज्जुद पढ़ी जाए। इसलिए चाहे तरावीह पढ़ भी ली हो, कोशिश यह करनी चाहिए कि दो नफ्ल या चार नफ्ल ही सही, लेकिन तहज्जुद की नमाज़ अवश्य पढ़ें।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम हर समय वुज़ू की हालत में रहते थे। आप "سُبۡحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمۡدِہٖ سُبۡحَانَ اللّٰہِ الۡعَظِیۡمِ" बहुत धीमे स्वर में लगातार पढ़ते रहते थे। (एक रिवायत)

"अफसोस! हमने उनकी कद्र नहीं की। उनके आध्यात्मिक गुणों का वर्णन नहीं कर सकता। उनकी जीवन साधारण मनुष्य का जीवन नहीं था, बल्कि वे उन लोगों में से थे जो खुदा तआला के विशेष बंदे होते हैं और दुनिया में कभी-कभी आते हैं।" (सैयद मीर हसन साहब)

जैसे ही नमाज़ का समय होता, आप अदालत की पुकार को छोड़कर और अनुपस्थिति से होने वाले नुकसान की बिल्कुल परवाह न करते हुए खुदा तआला की हाज़िरी की पुकार पर तुरंत उपस्थित हो जाते। (एक रिवायत)

जहाँ ये मुकदमों की पैरवी केवल पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए थी, वहीं आपने इन मुकदमों के दौरान कभी नमाज़ क़ज़ा नहीं की और इस प्रकार खुदा तआला के हकों से संबंधित कर्तव्यों से कभी लापरवाह नहीं हुए। ठीक अदालत में ही नमाज़ के समय इस प्रकार व्यस्त हो जाते मानो आपको कोई और काम ही नहीं है। (एक रिवायत)

उसी एक सत्ता में पूरी तरह लीन हो जाने और उसकी इच्छा में राज़ी रहने की अवस्था हर समय आप पर छाई रहती थी। दिन हो या रात, एकांत हो या लोगों के बीच, उस सच्चे प्रिय की याद कभी दिल से दूर नहीं होती थी।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे सेवक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की खुदा तआला से प्रेम का ईमान बढ़ाने वाला वर्णन

रमज़ान मुबारक के अवसर पर जमात के सदस्यों को दुआओं की ओर विशेष ध्यान दिलाना

इन दिनों में विशेष रूप से कठिनाइयों और झूठे मुकदमों में फँसे अहमदियों के लिए बहुत अधिक दुआ करें। अहमदी भाइयों के लिए खुदा तआला आसानी पैदा करे। उम्मत-ए-मुस्लिम को भी दुआओं में याद रखें।

दुनिया को तबाही से बचाने के लिए भी दुआ करें। खुदा तआला मासूम लोगों को उनके अत्याचार से बचाए और यदि युद्ध और विनाश तय है तो खुदा तआला हमेशा निर्दोषों को उससे सुरक्षित रखे और अत्याचार करने वालों को पकड़े।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 20 फ़रवरी 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से कल से रमज़ान शुरू हुआ है। यह रोज़ों का महीना ख़ुदा तआला ने हमें विशेष रूप से अपने साथ संबंध जोड़ने और अपनी आध्यात्मिक सुधार के लिए दिया है। ख़ुदा तआला हर अहमदी को इस महीने से अधिक से अधिक लाभ उठाने की तौफ़ीक दे। लेकिन हमेशा याद रखना चाहिए कि वास्तविक लाभ तभी होता है जब रमज़ान के बाद भी हम ख़ुदा तआला की मुहब्बत और इबादत के स्तर को बनाए रखें, बल्कि उन्हें बढ़ाने की कोशिश करें। तभी हम अपने पैदा होने के उद्देश्य को

पूरा करने वाले होंगे।

जैसा कि पिछले कुछ जुमा के ख़ुत्बों में मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़ुदा तआला से मुहब्बत, इबादत के तरीके और उनके स्तर तथा मोमिनों को उस पर अमल करने के लिए जो आपने नसीहतें और निर्देश दिए हैं, उनके बारे में बयान करता रहा हूँ। फिर आपके सच्चे सेवक के, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व

सल्लम के उस आदर्श का सच्ची तरह पालन करने के कुछ घटनाएँ भी बयान की थीं। यह विषय अभी भी जारी है और आज रमज़ान के संबंध में भी यही चलता रहेगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवन-चर्या के इसी संदर्भ में कुछ घटनाएँ बयान करूँगा, जिनसे ख़ुदा तआला से संबंध और दुआओं की ओर ध्यान का पता चलता है।

यह भी ख़ुदा तआला का विशेष फ़ज़्ल है कि वह इबादत और ख़ुदा तआला की मुहब्बत से जुड़ी इन घटनाओं जो आका और उनके सच्चे सेवक से संबंधित हैं के माध्यम से हमें यहाँ तक ले आया कि हम रमज़ान में प्रवेश कर गए।

हमें अपने हालात का मूल्यांकन करने की भी तौफ़ीक मिल रही है और मिल सकती है, ताकि हम अपनी स्थिति को बेहतर बना सकें। इसलिए जो घटनाएँ मैं बयान करूँगा या करता रहा हूँ, हम में से हर एक को चाहिए कि अपनी आध्यात्मिक स्थिति को सुधारने और उसका जायज़ा लेने के लिए उन्हें अपने सामने रखे और प्रयास करता रहे कि हम उन बातों और कर्मों पर भी अमल करें, जो हमारे आका हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके सच्चे सेवक के इबादत के तरीके थे या जिनका उनका ख़ुदा तआला से संबंध था। केवल यह न हो कि हम इन घटनाओं को सुनकर आनंद लें, बल्कि ये हमारे लिए मार्गदर्शक बननी चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवन की घटनाओं में से हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु की एक रिवायत प्रस्तुत करता हूँ। उन्होंने मौलवी मुहम्मद अब्दुल्लाह बटालवी साहब का बयान लिखा है कि उन्होंने बताया कि संभवतः 1907 की बात है कि एक बार अमतुर्रहमान साहिबा, पुत्री काज़ी ज़ियाउद्दीन साहब मरहूम, जो कहती हैं कि मेरी ननिहाल की रिश्तेदार भी थीं, उन्होंने मुझे एक कागज़ का टुकड़ा दिया, जो रद्दी के रूप में था। लेकिन क्योंकि उस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा के हाथ से लिखी हुई बातें थीं, इसलिए मैंने उसे बड़े शौक से तबर्रुक के रूप में ले लिया और सुरक्षित रखा।

फिर किसी समय वह कागज़ मुझसे इधर-उधर हो गया, किसी किताब में चला गया। लेकिन क्योंकि उससे एक घटना जुड़ी हुई थी, जो मुझे अमतुर्रहमान साहिबा ने स्वयं सुनाई थी, इसलिए उस पर लिखी गई सरल और अनौपचारिक लिखावट में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़ुदा तआला से संबंध, तक़्वा, पवित्रता और इबादत के शौक पर रोशनी पड़ती है। इसलिए मैं उसका उल्लेख आवश्यक समझता हूँ।

अमतुर्रहमान साहिबा, जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के घर में रहती थीं, उन्होंने देखा और मुझे बताया कि एक दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा ने यह प्रयोग करना चाहा कि क्या आँखें बंद करके कागज़ पर लिखा जा सकता है या नहीं। यह एक घरेलू वातावरण था, जिसमें पति-पत्नी के बीच यह प्रयोग हो रहा था।

चुनांचे उस कागज़ के टुकड़े पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आँखें बंद करके यह वाक्य लिखा, जो मुझे शब्दशः याद है हालाँकि कागज़ खो गया लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि यदि वह मिल भी जाए तो यही शब्द उस पर लिखे होंगे। आपने लिखा: “मनुष्य को चाहिए कि हर समय ख़ुदा तआला से डरता रहे और पाँच वक्त उसकी हाज़िरी में दुआ करता रहे।”

यह वही स्तर है, जिसकी आप हमेशा अपने मानने वालों को शिक्षा देते रहे। आपको हर समय यही चिंता रहती थी कि मेरे अनुयायी, बल्कि हर मोमिन, ऐसा हो जिसमें ख़ुदा का डर हो और जो हमेशा इबादत की ओर ध्यान देने वाला हो।

उस कागज़ पर हज़रत अम्माँ जान रज़ियल्लाहु अन्हा की लिखावट भी थी, जो सामान्य घरेलू बातों से संबंधित थी। उनके सरल शब्द यह थे: “महमूद मेरा प्यारा बेटा है, कोई उसे कुछ न कहे।” और एक और वाक्य बच्चों के बारे में था: “मुबारक अहमद बिस्कुट माँगता है।”

ये दोनों की लिखावटें थीं एक साधारण घरेलू बातें, और दूसरी गहरी नसीहत। आगे बताया गया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की लिखावट, यद्यपि थोड़ी टूटी-फूटी थी (क्योंकि आँखें बंद करके लिखी गई थी), फिर भी मजबूत और स्पष्ट थी। उसमें सीधी पंक्तियाँ बनी हुई थीं, जैसे सामान्य लिखावट में होती हैं। लेकिन हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा की लिखावट में अक्षर ऊपर-नीचे थे और पंक्तियाँ भी सीधी नहीं थीं।

लेकिन असली बात यह है कि उस लिखावट में क्या लिखा गया। यही एक विशेष बात है, जो हमेशा आनंद देती है कि जब आप घर में भी बिना किसी तैयारी के अचानक कुछ लिखते हैं, तो आपके मन में केवल नसीहत के शब्द ही आते हैं। जबकि हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा की लिखावट घर के वातावरण के अनुसार सामान्य बातों पर आधारित थी।

यही वह अंतर है, जो ख़ुदा के भेजे हुए लोगों और सामान्य लोगों में होता है। आपके दिल में यह दर्द था कि कैसे लोगों को ख़ुदा तआला के करीब लाया जाए और उनमें इबादत का शौक पैदा किया जाए।

(संदर्भ: सीरत-उल-महदी, भाग 2, हिस्सा चौथा, पृष्ठ 148-149, रिवायत 1204)

इस प्रकार यह एक साधारण घरेलू घटना है, लेकिन इसमें बहुत गहरा सबक है।

इसी तरह हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक और घटना बयान की है। मियाँ अब्दुल्लाह सनौरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने बताया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 1884 में यह इरादा किया कि कादियान से बाहर जाकर कुछ समय एकांत में रहें (चिल्ला करें) और भारत की यात्रा भी करें।

इसलिए आपने सोचा कि जिला गुरदासपुर के सोजानपुर में जाकर एकांत में रहें। मियाँ अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मुझे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक पोस्टकार्ड मिला। मैंने निवेदन किया कि मुझे भी इस यात्रा में साथ रखें। आपने अनुमति दे दी।

लेकिन फिर आपको इल्हाम हुआ कि “तुम्हारी समस्या का समाधान होशियारपुर में होगा।” इसलिए आपने सोजानपुर जाने का इरादा छोड़ दिया और होशियारपुर जाने का निश्चय किया।

जनवरी 1886 में जब आप होशियारपुर जाने लगे, तो आपने मियाँ अब्दुल्लाह को कादियान बुलाया और शेख मेहर अली, जो होशियारपुर के एक प्रमुख व्यक्ति थे, को पत्र लिखा कि दो महीने के लिए किसी शांत स्थान पर घर की व्यवस्था करें, जो शहर के किनारे हो और दो मंजिला हो।

शेख मेहर अली ने अपना एक मकान, जो “तवेला” के नाम से जाना जाता था, खाली कर दिया। आप बैलगाड़ी से ब्यास नदी के रास्ते वहाँ पहुँचे। मियाँ अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं, शेख हामिद अली रज़ियल्लाहु अन्हु और फतेह खान साथ थे।

जब हम नदी पार करने के लिए नाव में बैठे, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुझसे कहा: "मियाँ अब्दुल्लाह! एक पूर्ण (सिद्ध) व्यक्ति की संगति इस नदी यात्रा की तरह है जिसमें पार पहुँचने की भी आशा है और डूब जाने का भी डर।”

मैंने उस समय इस बात पर अधिक ध्यान नहीं दिया, लेकिन जब फतेह खान बाद में मार्ग से भटक गया, तो मुझे यह बात याद आई।

आगे बताया गया कि हम रास्ते में फतेह खान के गाँव में ठहरे और अगले दिन होशियारपुर पहुँचे। वहाँ पहुँचकर आपने ऊपर वाले कमरे में निवास किया और हमारे बीच किसी प्रकार का विवाद न हो, इसलिए हम तीनों के अलग-अलग काम निर्धारित कर दिए।

मेरा काम खाना पकाना था, फतेह खान का काम बाजार से सामान लाना, और शेख हामिद अली रज़ियल्लाहु अन्हु का काम मेहमानों की देखभाल करना।

फिर आपने एक घोषणा कर दी कि चालीस दिन तक कोई भी मुझसे मिलने न आए और न ही मुझे किसी दावत के लिए बुलाए। उसके बाद बीस दिन तक लोग मिल सकते हैं, प्रश्न-उत्तर कर सकते हैं।

आपने हमें भी निर्देश दिया कि दरवाज़ा हमेशा अंदर से बंद रखा जाए, और घर में भी कोई मुझे न बुलाए। यदि मैं किसी को बुलाऊँ, तो केवल आवश्यक बात ही करे। कोई भी ऊपर मेरे पास न आए।

आपने यह भी कहा कि मेरा भोजन ऊपर पहुँचा दिया जाए, लेकिन मेरे खाने का इंतजार न किया जाए। बर्तन बाद में ले जाए जाएँ।

नमाज़ के बारे में आपने कहा कि मैं अपनी नमाज़ ऊपर पढ़ूँगा, क्योंकि मैं चिल्ला कर रहा हूँ, और तुम लोग नीचे मिलकर नमाज़ पढ़ो।

हाँ, जुमे की नमाज़ के लिए आपने कहा कि यह आवश्यक है, इसलिए शहर के

बाहर कोई सुनसान मस्जिद ढूँढो, जहाँ हम अलग होकर नमाज़ अदा कर सकें।

चुनांचे शहर के बाहर एक बाग में एक छोटी सी सुनसान मस्जिद मिली, जहाँ आप जुमे के दिन जाते, हमें नमाज़ पढ़ाते और ख़ुद ख़ुत्बा भी देते थे।

मियाँ अब्दुल्लाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते थे कि मैं खाना रखने के लिए ऊपर जाया करता था और हुज़ूर अलैहिस्सलाम से कोई बात नहीं करता था। लेकिन कभी-कभी हुज़ूर अलैहिस्सलाम ख़ुद मुझसे कोई बात करते तो मैं उत्तर दे देता। एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुझसे फ़रमाया: "मियाँ अब्दुल्लाह! इन दिनों मुझ पर ख़ुदा तआला के बड़े-बड़े फ़ज़्ल के दरवाज़े खुले हुए हैं और कभी-कभी लंबे समय तक ख़ुदा तआला मुझसे बातें करता रहता है। यदि इन घटनाओं को लिखा जाए तो वे कई पन्नों में आ जाएँ।"

चुनांचे मियाँ अब्दुल्लाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि पिसर महमूद (प्रतिज्ञात पुत्र) के संबंध में जो इल्हाम हुए थे, वे भी इसी चिल्ला के दौरान हुए थे। और चिल्ला के बाद होशियारपुर से ही आपने इस भविष्यवाणी की घोषणा की थी। यह 20 फ़रवरी 1886 का वह इश्तिहार है, जो जमात में "पेशगोई मसलिह मौऊद" के नाम से जाना जाता है।

यह भी एक विशेष संयोग है कि आज 20 फ़रवरी ही है, और यह वही दिन है जब इस भविष्यवाणी के बड़े गौरव के साथ पूरा होने का दिन भी है।

वह पसर महमूद जो भविष्यवाणी के अनुसार पैदा हुआ, उसकी ख़िलाफ़त बावन (52) वर्षों तक कायम रही और ख़ुदा तआला ने उसे अनेक सफलताओं से नवाज़ा। वह सारी भविष्यवाणियाँ, इल्हाम और बातें जो "पेशगोई मसलिह मौऊद" में थीं, वे सब हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु में पूरी हुईं।

और यह संयोग मैं इसलिए कह रहा हूँ कि यह घटना आज के दिन ही मेरे सामने आई, अन्यथा यह पहले या बाद में भी आ सकती थी। लेकिन ख़ुदा तआला की यही हिकमत थी कि यह आज ही सामने आए और मैं इसे बयान कर दूँ।

20 फ़रवरी, जो "पेशगोई मसलिह मौऊद" का दिन है, उसके संदर्भ में इस घटना का पृष्ठभूमि भी स्पष्ट हो गया कि किस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम गए, चिल्ला किया और वहाँ आपको शुभ समाचार दिए गए।

इन दिनों जमात में इसके जलसे भी हो रहे हैं और इससे इतिहास का भी पता चलता है। एम टी ए पर भी कार्यक्रम आ रहे हैं, उनसे भी जानकारी मिलती है। उन्हें देखना चाहिए।

मियाँ अब्दुल्लाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि जब चालीस दिन पूरे हो गए, तो फिर घोषणा के अनुसार आप बीस दिन और वहाँ ठहरे। इन दिनों में कई लोगों ने आपको दावत दी, कई लोग धार्मिक चर्चा के लिए आए और बाहर से भी आपके पुराने मिलने वाले मेहमान आए। इन्हीं दिनों में मुरलीधर से आपका वाद-विवाद हुआ, जो "सुरमा चश्म आर्य" में दर्ज है।

जब दो महीने की अवधि पूरी हो गई, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उसी रास्ते से कादियान वापस रवाना हुए। होशियारपुर से लगभग पाँच मील की दूरी पर एक बुज़ुर्ग की कब्र है।

सफ़र के दौरान, जब आप एक बाग़ के पास पहुँचे, तो आप थोड़ी देर के लिए बैलगाड़ी से उतर आए और फ़रमाया: "यह अच्छी छायादार जगह है, यहाँ थोड़ी देर ठहरते हैं।"

इसके बाद आप उस कब्र की ओर गए, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह किसी बुज़ुर्ग की है। मियाँ अब्दुल्लाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं भी आपके पीछे-पीछे चला गया, जबकि शेख हामिद अली रज़ियल्लाहु अन्हु और फतेह खान वहीं रह गए।

आप कब्र के पास पहुँचे, दरवाज़ा खोलकर अंदर गए और कब्र के सिरहाने खड़े होकर दुआ के लिए हाथ उठाए और कुछ देर तक दुआ करते रहे। फिर वापस आए और मुझसे कहा: "जब मैंने दुआ के लिए हाथ उठाए, तो जिस बुज़ुर्ग की यह कब्र है, वह कब्र से निकलकर दो घुटनों के बल मेरे सामने बैठ गए। अगर तुम साथ न होते तो मैं उनसे बातें भी कर लेता। उनकी आँखें बड़ी थीं और रंग सांवला था।"

फिर आपने कहा कि अगर यहाँ कोई देखभाल करने वाला हो तो उससे इस बुज़ुर्ग के बारे में पूछो। जब उससे पूछा गया तो उसने कहा कि मैंने तो उन्हें नहीं देखा, क्योंकि उनकी मृत्यु को लगभग सौ वर्ष हो चुके हैं, लेकिन अपने पूर्वजों से सुना है कि वे बहुत बड़े बुज़ुर्ग थे और इस क्षेत्र में उनका बहुत प्रभाव था।

जब उससे उनके हुलिए के बारे में पूछा गया तो उसने बताया कि उनका रंग सांवला था और आँखें बड़ी थीं ठीक वैसा ही जैसा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया था।

कुछ लोग कहते हैं कि मृत लोगों से कुछ नेक लोगों, औलिया या नबियों का इस प्रकार संपर्क हो जाता है या वे उन्हें दिखाई देते हैं। ये सब ख़ुदा तआला के अपने तरीके हैं।

इसके बाद यह यात्रा समाप्त हुई और आप कादियान लौट आए।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने इस यात्रा के बारे में मियाँ अब्दुल्लाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि इस एकांत के समय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क्या करते थे और किस प्रकार इबादत करते थे।

उन्होंने उत्तर दिया कि हमें इसका पूरा ज्ञान नहीं, क्योंकि आप ऊपर वाले कमरे में रहते थे और हमें वहाँ जाने की अनुमति नहीं थी। केवल भोजन आदि के लिए हम अनुमति लेकर ऊपर जाते थे।

मियाँ अब्दुल्लाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बताते हैं कि एक दिन जब मैं खाना रखने गया, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मुझे यह इल्हाम हुआ है:

"بُوْرِكَ مَنْ فِيْهَا وَمَنْ حَوْلَهَا"

और इसकी व्याख्या करते हुए आपने कहा कि "مَنْ فِيْهَا" से मेरा अर्थ है (अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) और "مَنْ حَوْلَهَا" से तुम लोग हो, जो मेरे साथ हो।

मियाँ अब्दुल्लाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बताते हैं कि मैं तो पूरे दिन घर में रहता था, केवल जुमे के दिन बाहर जाता था। शेख हामिद अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी अधिकतर घर में रहते थे, लेकिन फतेह खान अक्सर बाहर रहता था।

वे बताते हैं कि उन दिनों फतेह खान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इतना मानने वाला था कि वह कहता था कि मैं तो उन्हें नबी मानता हूँ। मैं इस बात से घबरा जाता था, क्योंकि उस समय का सामान्य विश्वास यही था कि अब कोई नबी नहीं आ सकता।

लेकिन फतेह खान उस समय इतना मानने वाला था कि वह आपको नबी कहता था, जबकि उस समय आपने न तो बैअत ली थी और न ही कोई दावा किया था।

लेकिन जब उसे ठोकर लगी, तो वह मार्ग से भटक गया। इसलिए मनुष्य को हमेशा अपने अच्छे अंत के लिए दुआ करनी चाहिए और अपने ईमान को मजबूत रखने का प्रयास करना चाहिए। विशेष रूप से रमज़ान में यह दुआ करनी चाहिए कि ख़ुदा तआला हमारा अंत अच्छा करे और हमें ईमान में मजबूत रखे।

मियाँ अब्दुल्लाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह भी बताया कि एक बार जब मैं खाना देने गया, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा: "ख़ुदा तआला मुझसे इस प्रकार बात करता है कि यदि मैं इनमें से थोड़ी सी बातें भी प्रकट कर दूँ, तो ये जो लोग तुम्हें मेरे मानने वाले दिखाई देते हैं, सब हट जाएँ।"

वास्तव में ऐसा ही हुआ कि जब आपने अपना दावा किया, तो कुछ लोग दूर हो गए और विरोध में भी बढ़ गए, क्योंकि वे यह कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि ख़ुदा तआला इस प्रकार बात कर सकता है।

(संदर्भ: सीरत-उल-महदी, भाग 1, हिस्सा प्रथम, पृष्ठ 62-65, रिवायत संख्या 88)

इसी प्रकार एक और घटना आपके नमाज़ पढ़ने के तरीके के बारे में है।

कुछ लोग नमाज़ के फिक़्ही मसलों पर चर्चा करते हैं कि हाथ कैसे बाँधने चाहिए और विभिन्न क्रियाएँ कैसी होनी चाहिए। इस संदर्भ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नमाज़ पढ़ने का तरीका एक रिवायत में इस प्रकार आता है।

मियाँ अली मुहम्मद साहब बयान करते हैं कि मैंने एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सुन्नत नमाज़ पढ़ते देखा। आपने हाथ नाभि से ऊपर बाँधे हुए थे और दाएँ हाथ की मध्य उंगली कोहनी तक पहुँचती थी।

सज्दा करते समय आप दोनों हाथों के बीच माथा और नाक जमीन पर रखते थे और उंगलियाँ सीधी काबा की दिशा में होती थीं।

जब आप सज्दा से उठते, तो आपकी पगड़ी थोड़ी ढीली हो जाती थी, जिसे आप उंगली से ठीक कर लेते थे।

यह नमाज़ आपने मस्जिद अक्सा में अपने पिता की कब्र के दक्षिण की ओर खड़े होकर पढ़ी और उसके बाद फर्ज़ नमाज़ शुरू हुई, जो हज़रत मौलवी नूरुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाई।

(संदर्भ: रिवायत अस्हाब-ए-अहमद, भाग 2, पृष्ठ 13)

इसी प्रकार हज़रत मुहम्मद जमील साहब बयान करते हैं कि जब पहली बार प्लेग की बीमारी फैली, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने परिवार सहित

बाग़ में चले गए।

वे कहते हैं कि हम लोग रात को पहरा देते थे और पहरे के दौरान जब हम आपके डेरे के पास से गुजरते, तो आपको नमाज़ में व्यस्त पाते। खुदा जाने आप कब सोते होंगे।

(संदर्भ: रिवायत अस्हाब-ए-अहमद, भाग 2, पृष्ठ 358)

इसी प्रकार हज़रत चौधरी भाई अब्दुर्रहमान साहब बयान करते हैं:

"हुज़ूर अलैहिस्सलाम तहज्जुद की नमाज़ बड़े विनम्र भाव से पढ़ते थे। छोटी मस्जिद के पास वाले कमरे में भी आपकी आवाज़ सुनाई देती थी। आपका तरीका था कि اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ को बार-बार दोहराते थे।"

(संदर्भ: रिवायत अस्हाब-ए-अहमद, भाग 2, पृष्ठ 336)

अतः यह दुआ हमें भी दोहरानी चाहिए ताकि खुदा तआला हमें हमेशा हिदायत पर कायम रखे।

हज़रत मास्टर नज़ीर हुसैन साहब रज़ियल्लाहु अन्हो आपकी तहज्जुद की नमाज़ की हालत बयान करते हुए लिखते हैं कि एक बार जहलम जाते हुए हम लाहौर में मेरे दादा हज़रत मियां चराग दीन साहब मरहूम के मकान "मुबारक मंज़िल" में ठहरे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने रात यहीं गुज़ारी। एक कमरे में हुज़ूर के सोने के लिए जगह बना दी गई। कहते हैं, मैं भी उसी कमरे के बाहर दालान में दरवाज़े के पास सो गया। रात के करीब तीन बजे जब मैं जागा और कमरे के अंदर देखा तो हुज़ूर नमाज़ पढ़ रहे थे। मैं भी वुज़ू करके हुज़ूर के पीछे कुछ दूरी पर नमाज़ पढ़ने लग गया। मैंने बहुत कोशिश की कि हुज़ूर जितना क़ियाम, रुकू या सज्दा कर सकूं, लेकिन नहीं कर सका। सिर्फ दो रकअतों में ही मैं बहुत थक गया, जबकि हुज़ूर अभी उसी रकअत में थे जिसमें मैं शामिल हुआ था।

अर्थात जिस रकअत में मैं शामिल हुआ था, वह दो रकअतें हुज़ूर पढ़ रहे थे, अभी शुरू ही की थीं, क़ियाम में ही थे कि मैं थक गया। फिर मैंने नमाज़ छोड़कर अपनी अलग नमाज़ पढ़नी शुरू कर दी। यह अपने आका की पैरवी में आपकी इबादत का एक नमूना था और इस बात की कोशिश थी कि खुदा तआला की इबादत का हक किस तरह अदा किया जाए।

बहरहाल, कहते हैं कि दिन के समय जब हम लोग हुज़ूर के पास बैठे थे और हुज़ूर जमाअत को तहज्जुद पढ़ने की ताकीद और नसीहत कर रहे थे, तो मैंने अर्ज़ किया कि अगर तहज्जुद न पढ़ी जाए तो कम से कम क्या किया जाए? लोग पूछते हैं कि तहज्जुद नहीं पढ़ी जाती तो क्या किया जाए? इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया कि:

उस समय इस्तिग़फ़ार बहुत पढ़े। खुदा की तस्बीह और हम्द बहुत करे। इससे फिर तहज्जुद पढ़ने की तौफ़ीक मिल जाती है।

अब ये दुआएँ जो आपने सिखाईं, यह इसलिए नहीं कि ये तहज्जुद का पूरा बदला बन जाएँगी, बल्कि इसलिए कि इनसे तहज्जुद पढ़ने की तौफ़ीक मिलती है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी लिखा है कि जब मुझसे तहज्जुद पढ़ने में लापरवाही हो जाती है, (यह बयान शायद मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब का है या उस रावी का) तो मैं इस पर अमल करता हूँ और मुझे तहज्जुद की तौफ़ीक मिल जाती है।

(उद्धारित अज़ रिवायात असहाब-ए-अहमद अलैहिस्सलाम, जिल्द 3, सफ़ा 178)

अतः यह वह नुस्खा है जिसे हमें आज भी आलस्य के दिनों में अपनाना चाहिए।

आजकल हम रमज़ान से गुज़र रहे हैं और तहज्जुद की कुछ न कुछ तौफ़ीक मिल ही जाती है। अगर नहीं भी मिलती तो कोशिश करनी चाहिए। बेशक मस्जिद में तरावीह पढ़ाई जाती है और यह कमजोरों, बीमारों या उन लोगों के लिए एक प्रकार का विकल्प होती है जो सुबह सही समय पर उठ नहीं सकते या ज़्यादा समय नहीं दे सकते। लेकिन यह ऐसा विकल्प नहीं जो पूरा हक अदा कर सके।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत और आपके सच्चे गुलाम का तरीका यही है कि रात को उठकर तहज्जुद पढ़ी जाए। इसलिए चाहे तरावीह पढ़ भी ली हो, कोशिश यह करनी चाहिए कि दो नफ़्ल या चार नफ़्ल ही सही, लेकिन तहज्जुद की नमाज़ ज़रूर पढ़ें।

इसी तरह हज़रत ख़ैरुद्दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि:

"एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बसंत के दिनों में सुबह लगभग आठ बजे क़ादियान से सैर के लिए निकले, उस रास्ते से जो भीनी और कादिराबाद के बीच है और जिसे सड़क भी कहते हैं। आपने क़ादियान की ज़मीन की सीमा पर दो नफ़्ल नमाज़ पढ़ी और फिर हमारे गाँव के पास से होते हुए वापस क़ादियान लौट गए।"

(रिवायात असहाब-ए-अहमद अलैहिस्सलाम, जिल्द 3, सफ़ा 90)

अर्थात सैर के दौरान भी आपको इबादत का ध्यान रहता था।

अब क़ादियान में रहने वालों का भी यह कर्तव्य है कि आपने क़ादियान के अंदर भी और किनारों पर भी नफ़्ल और नमाज़ें पढ़ी हैं, इसलिए उसके पवित्र होने का ध्यान रखें और इस बस्ती का हक अदा करते हुए अपनी इबादत के स्तर को ऊँचा करें।

हज़रत मलिक नियाज़ मुहम्मद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि 1904 में जब मैं क़ादियान गया तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम करम दीन वाले मुकदमे के सिलसिले में गुरदासपुर जाया करते थे। जब मैं भी वहाँ गया तो एक तालाब के पास एक मकान में हुज़ूर ठहरे हुए थे और जमाअत के लोग भी वहीं ठहरते थे। लंगरखाना भी उसी के एक हिस्से में चल रहा था।

कचहरी में मैंने देखा कि हुज़ूर के लिए एक दरी बिछाई जाती थी और हुज़ूर उस पर बैठते थे और दूसरे लोग भी उसी पर बैठते थे। वह एक बड़ी दरी थी, सब लोग बैठ जाते थे।

कहते हैं कि हुज़ूर के हर समय वुज़ू में रहने के बारे में एक बात मैंने ख़ास तौर पर नोट की कि जब भी हुज़ूर पेशाब आदि के लिए जाते, तो उसके बाद वुज़ू ज़रूर कर लेते थे। इससे मुझे यक़ीन हो गया कि हुज़ूर हर समय वुज़ू में रहते थे।

आप "सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही, सुब्हानल्लाहिल अज़ीम" बहुत धीरे-धीरे लगातार पढ़ते रहते थे।

(उद्धारित अज़ रिवायात असहाब-ए-अहमद अलैहिस्सलाम, जिल्द 2, सफ़ा 27)

हज़रत चौधरी भाई अब्दुर्रहीम साहब रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि:

"प्रारंभिक दिनों में हुज़ूर का नियम यह था कि नमाज़ों में आमतौर पर सबसे पहले मस्जिद में पहुँचते थे। एक बार मैंने कोशिश की कि मैं सबसे पहले पहुँचूँ, लेकिन हुज़ूर पहले से मौजूद थे।"

(रिवायात असहाब-ए-अहमद अलैहिस्सलाम, जिल्द 2, सफ़ा 336)

हुज़ूर हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी युवावस्था का एक हिस्सा, जो लगभग सात वर्षों पर फैला हुआ था, सियालकोट में बिताया। वहाँ भी आपके दिन-रात खुदा की मोहब्बत में गुज़रते थे और जिसने भी बयान किया, उसने आपकी एकांतप्रियता, तन्हाई और नमाज़ व तिलावत में डूबे रहने का विशेष रूप से उल्लेख किया।

इस संदर्भ में सियालकोट के कुछ विश्वसनीय और बुज़ुर्ग माने जाने वाले व्यक्तियों की गवाहियाँ भी प्रस्तुत हैं।

हकीम मज़हर हुसैन साहब लिखते हैं कि हालाँकि बाद में वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे के बाद विरोधियों में शामिल हो गए थे और कुछ घटनाओं पर आपत्ति भी की थी फिर भी सियालकोट के समय की पवित्र यादों को भूल नहीं सके। वे लिखते हैं:

"विश्वसनीय व्यक्तित्व, दाढ़ी वाले, उच्च साहस और ऊँचे विचारों वाले इंसान। भीतर प्रवेश करते ही वुज़ू के लिए पानी माँगा और वुज़ू से निवृत्त होकर मग़रिब की नमाज़ अदा की और फिर ज़िक्र में लगे रहे।"

(हयात-ए-अहमद, जिल्द 1, सफ़ा 158)

इसके बाद उन्होंने खुदा का ज़िक्र भी किया।

फिर मशहूर मुस्लिम नेता मौलवी ज़फ़र अली खान साहब के पिता, अख़बार "ज़मींदार" के संपादक मुंशी सिराजुद्दीन साहब मरहूम ने बयान किया:

"मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब लगभग 1860 या 1861 में ज़िला सियालकोट में मुहर्रिर थे। उस समय आपकी आयु लगभग 22-24 वर्ष थी। हम प्रत्यक्षदर्शी

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY

थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान

सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलगम इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।

हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

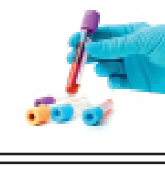

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा

और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा

फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

गवाही से कह सकते हैं कि युवावस्था में भी आप अत्यंत नेक और परहेज़गार थे। नौकरी के काम के बाद आपका पूरा समय धार्मिक अध्ययन में बीतता था। आम लोगों से कम मिलते थे।"

(हयात-ए-अहमद, जिल्द 1, सफ़ा 374)

एक बार हज़रत शेख याक़ूब अली साहब इर्फ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हो सियालकोट में सैयद मीर हसन साहब से मिले, तो उन्होंने आँखों में आँसू भरकर कहा:

"अफसोस, हमने उनकी क़दर नहीं की। उनके आध्यात्मिक गुणों को बयान नहीं कर सकता। उनकी ज़िंदगी सामान्य इंसान की ज़िंदगी नहीं थी, बल्कि वे उन लोगों में से थे जो खुदा तआला के खास बंदे होते हैं और दुनिया में कभी-कभी आते हैं।"

(तारीख़-ए-अहमदियत, जिल्द 1, सफ़ा 95; अल-हकम, जिल्द 37, नंबर 12, दिनांक 7 अप्रैल 1934, सफ़ा 3, कॉलम 3)

एक और घटना है जो एक साधारण देहाती व्यक्ति से संबंधित है, जिसने भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नूर को पहचान लिया।

यह नूर खुदा तआला से प्रेम करने वालों और उसके चुने हुए बंदों के चेहरों से झलकता है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा है कि उनकी वालिदा साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बयान किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया:

"एक बार मैं एक मुकदमे के सिलसिले में डलहौज़ी पहाड़ की ओर जा रहा था। रास्ते में बारिश हो गई। मैं और मेरा साथी इक्के से उतरकर एक पहाड़ी व्यक्ति के घर की ओर गए। मेरे साथी ने अंदर आने की अनुमति माँगी, लेकिन उसने मना कर दिया। इस पर दोनों में बहस हो गई और वह गाली देने लगा।

मैं यह सुनकर आगे बढ़ा। जैसे ही मेरी और उस व्यक्ति की आँखें मिलीं, तो मेरे कुछ कहने से पहले ही उसने सिर झुका लिया और कहा कि मेरे घर में एक जवान लड़की है, इसलिए मैं अजनबी को अंदर नहीं आने देता, लेकिन आप अंदर आ सकते हैं।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे कि वह मुझे नहीं जानता था और न मैं उसे जानता था।

(सीरत-उल-महदी, जिल्द 1, भाग 1, सफ़ा 6, रिवायत नंबर 8)

यह वास्तव में खुदाई नूर था शराफ़त और इबादत की पहचान जो आपके चेहरे से उसे दिखाई दिया, इसलिए उसने अनुमति दे दी।

खुदा तआला की ज़ात हर समय आपके सामने रहती थी। कोई भी व्यस्तता या काम आपको उसके ज़िक्र से दूर नहीं कर सका।

चुनाँचे मुकदमों के दौरान भी हमने यही आदर्श देखा है। मैं पहले भी यह घटना बयान कर चुका हूँ। ऐसे नाज़ुक समय में, जब मुकदमा पेश हो रहा हो, नमाज़ का पूरा ध्यान रखना एक कठिन काम होता है, लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम खुदा तआला की मुहब्बत में इतने भरोसा रखने वाले और बेपरवाह थे कि मुकदमा अदालत में पेश है, हाज़िरी का समय कभी भी हो सकता है, हरकारा कभी भी बुला सकता है, लेकिन जैसे ही नमाज़ का समय होता, आप अदालत की पुकार को छोड़कर और गैरहाज़िरी से होने वाले नुकसान की कोई परवाह किए बिना खुदा तआला की बारगाह की पुकार पर हाज़िर हो जाते।

(उद्धारित अज़ सीरत-उल-महदी, जिल्द 1, भाग प्रथम, सफ़ा 14, रिवायत नंबर 17)

यही असली बात है जिसे हर व्यक्ति को याद रखना चाहिए कि नमाज़ के समय नमाज़ को हर हाल में प्राथमिकता देनी चाहिए। यही वह आदर्श और नमूना है जो एक सच्चे मोमिन की पहचान है। आपने अपने आका आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से यह सीखा और उस पर अमल किया और हमारे सामने यह उदाहरण रखा।

हज़रत शेख याक़ूब अली साहब इर्फ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने बहुत सुंदर ढंग से आपकी इस अवस्था का वर्णन किया है। लिखते हैं कि मुकदमों का यह सिलसिला बहुत लंबा था और कुछ मामलों में आपको चीफ़ कोर्ट तक पैरवी करनी पड़ती थी। वे लिखते हैं कि मैं इस जीवन के पाठकों को जिस बात की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ, वह आपका खुदा तआला से संबंध है।

जिन लोगों को आपकी संगति में रहने और आपकी बातें सुनने का अवसर मिला है या जिन्होंने आपकी प्रकाशित तक़रीरें पढ़ी हैं, वे जानते हैं कि हज़रत मिर्ज़ा साहब अलैहिस्सलाम हमेशा "हाथ काम में और दिल यार में" रहते थे, यानी हाथ काम में लगे होते थे और दिल खुदा की याद में मग्न रहता था, और आप इसी की शिक्षा भी देते थे।

मुकदमों में आम तौर पर देखा जाता है कि चाहे वादी हो या प्रतिवादी, दोनों ही बेचैनी और घबराहट की स्थिति में होते हैं। लेकिन जब हज़रत मिर्ज़ा साहब अलैहिस्सलाम मुकदमों की पैरवी के लिए जाते, तो आपकी प्रकृति में कोई बेचैनी या घबराहट नहीं होती थी। आप पूरे धैर्य और गरिमा के साथ खुदा तआला की ओर ध्यान लगाए रहते थे।

जहाँ यह मुकदमे केवल पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए थे, वहीं आपने इन मुकदमों के दौरान कभी नमाज़ क़ज़ा नहीं की और खुदा तआला के हक़ से संबंधित कर्तव्यों से गाफ़िल नहीं हुए। कचहरी में ही नमाज़ के समय इस तरह नमाज़ में लग जाते जैसे आपको कोई और काम ही न हो।

और उन्होंने घटनाएँ भी लिखी हैं कि कई बार कचहरी से आवाज़ें दी जाती थीं, लेकिन आप बेपरवाह रहते थे।

फिर लिखते हैं कि इन मुकदमों के सफ़रों में भी हर पल आपका ध्यान उसी सत्ता की ओर रहता था जो सृष्टिकर्ता और पालनहार है। उगते हुए सूरज, रात के आकाश में चमकते चाँद और सितारे, गिरते झरने, ऊँचे पहाड़, बहता पानी, लहलहाते खेत, पक्षियों की चहचहाहट और बादलों की गरज हर चीज़ में आपको उसी एक सत्ता का प्रतिबिंब दिखाई देता था।

अर्थात हर वस्तु में आपको खुदा तआला की शक्ति और सौंदर्य दिखाई देता था। हर ओर उसी सच्चे प्रिय का दर्शन होता था। चाँद को देखकर यदि मन बेचैन होता था तो इसलिए कि उसमें भी प्रिय के सौंदर्य की झलक दिखाई देती थी। सूरज में उसकी शक्ति, सितारों में उसकी चमक, सुंदर चेहरों में उसी सृष्टिकर्ता का सौंदर्य, हर सुंदर आँख और हर घुँघराले बाल उसी एक खुदा की ओर संकेत करते थे, और हर फूल और बाग़ उसी के सौंदर्य और कृपा की सुगंध से महकते थे।

बहुत सुंदर वर्णन है। कहते हैं कि देखने में तो लगता था कि आप इन मुकदमों के लिए जा रहे हैं, लेकिन वास्तव में इन सफ़रों में भी दुनिया के झगड़ों से अलग होकर खुदा की ओर ही ध्यान लगा रहता था।

जैसा कि मैंने पहले डलहौज़ी के सफ़र का उल्लेख किया है, वहाँ भी आपने रास्ते के दृश्यों को देखकर कहा था कि ये झरने और पहाड़ों की हरियाली कितनी सुंदर है।

अतः आप हर समय उसी एक सत्ता में लीन और संतुष्ट रहते थे। दिन हो या रात, एकांत हो या सभा उस सच्चे प्रिय की याद कभी दिल से दूर नहीं होती थी।

(उद्धारित अज़ हयात-ए-अहमद अलैहिस्सलाम, जिल्द 1, सफ़ा 85-87; तथा सीरत-ए-अहमद अलैहिस्सलाम, गैरमुद्रित)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि उनकी वालिदा साहिबा ने बताया कि एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"मुझे खुदा तआला की ओर से बताया गया है कि 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही, सुब्हानल्लाहिल अज़ीम' बहुत अधिक पढ़ना चाहिए।"

वालिदा साहिबा कहती हैं कि इस कारण आप इसे बहुत अधिक पढ़ते थे, यहाँ तक कि रात को बिस्तर पर करवट बदलते समय भी यही शब्द आपकी ज़बान पर होते थे।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि जब मैंने यह रिवायत मौलवी शीर अली साहब को सुनाई, तो उन्होंने कहा कि मैंने भी देखा है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम "सुब्हानल्लाह" बहुत पढ़ते थे।

और हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु स्वयं भी कहते हैं कि मैंने भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को "सुब्हानल्लाह" पढ़ते सुना है। आप बहुत धीरे, ठहर-ठहर कर, शांति और विनम्रता के साथ इन शब्दों को दोहराते थे, मानो साथ-साथ खुदा तआला के गुणों पर भी विचार कर रहे हों।

(सीरत-उल-महदी, जिल्द 1, भाग प्रथम, सफ़ा 3, रिवायत 1)

फिर हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं:

"पीर सिराजुल हक़ साहब नुमानी ने मुझसे बयान किया कि हज़रत साहब के सोने की स्थिति यह थी कि थोड़े-थोड़े समय के बाद आप जाग जाते थे और धीरे-धीरे 'सुब्हानल्लाह, सुब्हानल्लाह' कहते रहते थे, फिर सो जाते थे।"

(सीरत-उल-महदी, जिल्द 1, भाग द्वितीय, सफ़ा 287, रिवायत 310)

हज़रत शेख याक़ूब अली साहब इर्फ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपने आका और उपकारी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के तरीके की पैरवी में एकांत और तन्हाई बहुत पसंद थी। यदि आपके वश में होता तो आप कभी बाहर न आते। आपने कई बार अपनी तक़रीरों और लेखों में इसका उल्लेख किया है।

जब आपकी यह एकांतप्रियता, कोमल स्वभाव और तन्हाई पसंद करने की

प्रवृत्ति पर खुदाई प्रेम का गहरा प्रभाव पड़ा और आप पूरी तरह खुदा तआला की ओर आकर्षित हो गए, तो आपने अपने पिता को एक पत्र लिखा। इस पत्र को पढ़ने से पता चलता है कि आप बचपन से ही दुनिया से विरक्त और खुदा तआला से अपने संबंध को मजबूत करने के इच्छुक थे।

युवावस्था में लिखा गया यह पत्र आपकी पवित्र प्रकृति और उच्च चरित्र का एक भाग है।

यह पत्र फ़ारसी में है। उसका कुछ भाग इस प्रकार है:

आपने अपने पिता को संबोधित करते हुए लिखा कि इन दिनों मैं अपनी आँखों से देख रहा हूँ कि हर देश और हर क्षेत्र में हर वर्ष कोई न कोई महामारी आ जाती है, जो मित्रों को मित्रों से और प्रियजनों को प्रियजनों से अलग कर देती है। ऐसा कोई वर्ष नहीं होता जब ये भयानक घटनाएँ और विनाशकारी परिस्थितियाँ न हों।

इन हालात को देखकर दिल दुनिया से हट गया है और भय के कारण चेहरा पीला हो गया है। आज के समय के हालात भी हमें यही याद दिलाते हैं कि हर ओर अशांति फैली हुई है। इसलिए हमें खुदा तआला से अधिक से अधिक संबंध जोड़ना चाहिए।

फिर आपने लिखा कि अक्सर शेख मसलहुद्दीन सादी शीराज़ी के ये दो शेर याद आते हैं और आँखों से आँसू बहने लगते हैं:

"नश्वर जीवन पर भरोसा न कर,
समय के खेल से कभी सुरक्षित मत समझ।"

फिर आपने अपने ही तख़ल्लुस "फ़रख़ क़ादियानी" के दो मिसरे लिखे:

"हे युवक! इस तुच्छ दुनिया से दिल न लगा,
क्योंकि मृत्यु का समय अचानक आ जाता है।"

और अंत में लिखा कि मैं चाहता हूँ कि शेष जीवन एकांत में बिताऊँ, लोगों की संगति से दूर रहूँ और खुदा तआला की याद में लगा रहूँ, ताकि बीती हुई कमियों की भरपाई हो सके।

इस पत्र से यह भी पता चलता है और यह पत्र और भी लंबा है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम किसी प्रसिद्धि और महानता के इच्छुक नहीं थे, बल्कि खुदा तआला के साथ एक साफ़ और सच्चा संबंध रखते थे। यह एक सच्चाई है कि आपको एकांत और अलग रहकर इबादत करने से इतनी मुहब्बत थी कि यदि खुदा तआला के आदेश का पालन सामने न होता, तो आप कभी लोगों के बीच न आते। आपने फ़रमाया कि

"यदि खुदा तआला मुझे यह अधिकार दे कि एकांत और लोगों के बीच रहने में से किसे पसंद करता हूँ, तो उस पवित्र सत्ता की क़सम, मैं एकांत को ही चुनूँगा। मुझे तो खींच-खींचकर कार्य के मैदान में लाया गया है। जो आनंद मुझे एकांत में मिलता है, उसे खुदा के सिवा कौन जान सकता है। मैं लगभग पच्चीस वर्षों तक एकांत में बैठा रहा हूँ और कभी एक क्षण के लिए भी यह इच्छा नहीं की कि प्रसिद्धि के दरबार की कुर्सी पर बैठूँ। मुझे स्वभावतः लोगों के बीच बैठने से अरुचि रही है, लेकिन आदेश देने वाले के आदेश से विवश हूँ।"

(उद्धारित अज़ हयात-ए-अहमद अलैहिस्सलाम, जिल्द प्रथम, सफ़ा 111 से 115, हाशिया सहित)

इस प्रकार अपने पिता को पत्र लिखकर आपने सब कुछ छोड़ दिया। मानो यह एक प्रकार की राजसी स्थिति थी जिसे आपने त्याग दिया। आपके पिता की संपत्ति में सात गाँव थे।

(उद्धारित अज़ तारीख़-ए-अहमदियत, जिल्द 1, सफ़ा 42)

और यह सब कुछ आपने केवल खुदा तआला की मुहब्बत के लिए छोड़ दिया।

आप अपने अनुयायियों को भी कभी-कभी इस विषय में नसीहत किया करते थे। चूँकि एक घटना में लिखा है कि मियाँ मूसा ख़ान साहब बयान करते हैं कि मैं एक बार क़ादियान गया, तो वहाँ

"एक व्यक्ति नया-नया धर्म में शामिल हुआ था। उसने हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम की सेवा में अर्ज़ किया कि हुज़ूर! मुझे अनुमति दीजिए। फसल तैयार है," वह बड़ा ज़मींदार था, "मुझे उसकी बँटवारा करना है।" खेतिहर मजदूरों के साथ बँटाई होती है। जो मज़ारे (किसान) होते हैं, उनके साथ हिस्सा बाँटा जाता है। आपने फ़रमाया, "कितनी फसल है?" उसने अर्ज़ किया, "हुज़ूर, बहुत अधिक है।" आपने फ़रमाया, "मैंने तो बहुत से गाँव छोड़कर खुदा तआला का दरवाज़ा अपनाया है। आप कुछ दिन और ठहर जाएँ।"

(रिवायात-ए-अस्हाब-ए-अहमद अलैहिस्सलाम, जिल्द 4, सफ़ा 424)

अपनी धार्मिक स्थिति को बेहतर करें और दुनियावी काम खुदा तआला पर छोड़ दें, खुदा तआला कृपा करेगा।

आप उनके हालात जानते होंगे, इसलिए उस समय आपने उन्हें यह सलाह दी। लेकिन आपने दूसरी जगह यह भी फ़रमाया है कि दुनियादारी को पूरी तरह छोड़ना भी नहीं चाहिए। जो नेमतें खुदा तआला ने दी हैं, उनकी क़दर भी करनी चाहिए।

(उद्धारित अज़ मलफ़ूज़ात, जिल्द 10, सफ़ा 220, संस्करण 2022)

इस प्रकार उस नए अनुयायी की तरबियत के लिए आपने उसे यही सलाह दी, और यह बात परिस्थितियों के अनुसार भी होती है। हर व्यक्ति को अपने हालात भी देखने चाहिए कि वह दुनिया में इतना न डूब जाए कि पूरी तरह डूब जाए, और इतना भी दुनियात्यागी न हो जाए कि दुनिया के जो अधिकार हैं, वे भी समाप्त हो जाएँ।

इसलिए इस्लाम की एक संतुलित शिक्षा है, जिसे अपनाना चाहिए। लेकिन एक बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि खुदा तआला को कभी नहीं छोड़ना। इस पहलू से हमेशा बहुत सावधानी की आवश्यकता है।

ये थे आपके प्रेम, मुहब्बत और इबादत के कुछ पहलू, जो आज मैंने बयान किए। खुदा तआला इस रमज़ान में हमें सच्ची इबादत करने और इबादत का पूरा हक अदा करने की तौफ़ीक़ दे। और खुदा तआला अपनी मुहब्बत में हमें आगे बढ़ने की भी तौफ़ीक़ दे, ताकि हम इस रमज़ान से अधिक से अधिक लाभ उठाते रहें और बाद में भी उसके प्रभाव हमारे ऊपर बने रहें। खुदा तआला हमें वह बनाए जो एक सच्चे मोमिन और मुसलमान की पहचान है।

इन दिनों में विशेष रूप से उन अहमदियों के लिए बहुत दुआ करें जो कठिनाइयों और झूठे मुकदमों में फँसे हुए हैं। अल्लाह तआला अहमदी भाइयों के लिए आसानी पैदा करे। उम्मत मुस्लिमा को भी दुआओं में याद रखें। दुनिया को विनाश से बचाने के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला निर्दोष लोगों को उनके अत्याचार से बचाए और यदि युद्ध और विनाश निश्चित है, तो अल्लाह तआला हमेशा निर्दोषों को उससे सुरक्षित रखे और अत्याचारियों को पकड़ में लाए।(अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 13 मार्च 2026, सफ़ा 1 से 8)

पृष्ठ 12 का शेष

समय बाग में सौ से अधिक बकरे ज़बह किए गए होंगे।

{32} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि जब 1905 का भूकंप आया, तब मैं बच्चा था। हम नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब के शहर वाले मकान के पास स्थित हज़रत साहिब के मकान के एक भाग में अन्य बच्चों के साथ चारपाइयों पर सो रहे थे।

जब भूकंप आया, तो हम सब डरकर उठ गए और हमें समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। जब हम आँगन में आए, तो ऊपर से कंकड़-पत्थर गिर रहे थे। हम भागते हुए बड़े मकान की ओर गए। वहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और वालिदा साहिबा कमरे से बाहर आ रहे थे।

हमने पहुँचते ही आपको पकड़ लिया और आपसे लिपट गए। आप उस समय घबराए हुए थे और बड़े आँगन की ओर जाना चाहते थे, लेकिन चारों ओर बच्चे और वालिदा साहिबा आपसे लिपटे हुए थे। कोई इधर खींचता था, कोई उधर।

आख़िर बड़ी मुश्किल से आप और हम सब बड़े आँगन में पहुँचे। तब तक भूकंप के झटके भी कम हो चुके थे।

कुछ देर बाद आप हमें लेकर अपने बाग में चले गए। अन्य लोग भी अपना सामान लेकर वहाँ पहुँच गए। वहाँ आवश्यकता के अनुसार कुछ कच्चे मकान बनाए गए और कुछ तंबू लगाए गए, और हम सब लंबे समय तक वहीं रहे। उन दिनों मदरसा भी वहीं चलता था।

मानो बाग में एक पूरा शहर बस गया था। क्या ही अद्भुत समय था!

{33} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। हमसे क़ाज़ी अमीर हुसैन साहिब ने बयान किया कि प्रारंभ में मेरा विचार था कि सफ़र में क़सर नमाज़ सामान्य परिस्थितियों में जायज़ नहीं, बल्कि केवल युद्ध या भय की स्थिति में ही जायज़ है। इस विषय में मैं मौलवी साहिब (हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूर्व के प्रथम ख़लीफ़ा) के साथ बहस किया करता था।

जब गुरदासपुर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मुकदमा चल रहा था, तो मैं भी वहाँ गया। उस समय मौलवी साहिब और मौलवी अब्दुल करीम साहिब भी साथ थे।

जब ज़ुहर की नमाज़ का समय हुआ, तो आपने मुझसे कहा क़ाज़ी साहिब! आप नमाज़ पढ़ाएँ।

मैंने मन में निश्चय किया कि आज मैं क़सर नहीं करूँगा, बल्कि पूरी नमाज़ पढ़ाऊँगा।

जैसे ही मैंने नीयत बाँधी, हज़रत साहिब मेरे पीछे दाईं ओर खड़े थे। आपने तुरंत आगे बढ़कर मेरे कान के पास कहा क़ाज़ी साहिब! दो ही पढ़ेंगे ना?

मैंने कहा जी, दो ही पढ़ूँगा।

उसी समय से मेरा यह विवाद समाप्त हो गया और मैंने अपना विचार छोड़ दिया।

(शेष अगली कड़ी में)

(सीरत-उल-महदी, जिल्द प्रथम, सफ़ा 20 से 25, प्रकाशित क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

आपके सच्चे सेवक के इबादत के तरीके थे या जिनका उनका खुदा तआला से संबंध था। केवल यह न हो कि हम इन घटनाओं को सुनें और आनंद लें, बल्कि ये हमारे लिए मार्गदर्शक बननी चाहिए।

मनुष्य को चाहिए कि हर समय खुदा तआला से डरता रहे और पाँच वक्त उसकी हाज़िरी में दुआ करता रहे। (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

(यौम मसलिह मौऊद) के जलसे भी आजकल जमात में हो रहे हैं और इससे इतिहास का भी पता चलता है। एम टी ए पर भी कार्यक्रम आ रहे हैं। उनसे भी जानकारी मिलती है। इन्हें देखना चाहिए।

मनुष्य को हमेशा अपने अच्छे अंजाम के लिए दुआ और अपने ईमान की मजबूती के लिए प्रयास करते रहना चाहिए और इसके लिए दुआ भी मांगनी चाहिए। और विशेष रूप से रमज़ान में की जाने वाली दुआओं में यह दुआ भी हर एक को करनी चाहिए कि खुदा तआला हमारा अंजाम अच्छा करे और हमें ईमान में मजबूत रखे।

रात की पहरेदारी के दौरान हम हज़रत साहब के कैंप के पास से गुजरते और हुज़ूर अलैहिस्सलाम को नमाज़ में ही व्यस्त देखते। खुदा जाने आप कब सोते होंगे। (एक रिवायत)

हुज़ूर अलैहिस्सलाम तहज्जुद की नमाज़ें बड़े विनम्र भाव से पढ़ा करते थे। इसलिए छोटी मस्जिद के साथ वाले कमरे में भी आपकी आवाज़ सुनाई देती थी। आपका यह नियमित तरीका था कि "اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ" को बार-बार दोहराते थे। (एक रिवायत)

आजकल हम रमज़ान के दिनों से गुजर रहे हैं और तहज्जुद की कुछ न कुछ तौफ़ीक मिल ही जाती है। अगर नहीं भी मिलती तो कोशिश करनी चाहिए। निस्संदेह मस्जिद में तरावीह पढ़ाई जाती है और यह कमजोरों, बीमारों या ऐसे लोगों के लिए विकल्प के रूप में होती है जो सुबह सही समय पर उठ नहीं सकते या अधिक समय नहीं दे सकते। लेकिन यह ऐसा विकल्प नहीं है जो पूरा हक अदा कर सके। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत और आपके सच्चे सेवक का तरीका यही है कि रात को उठकर तहज्जुद पढ़ी जाए। इसलिए चाहे तरावीह पढ़ भी ली हो, कोशिश यह करनी चाहिए कि दो नफ्ल या चार नफ्ल ही सही, लेकिन तहज्जुद की नमाज़ अवश्य पढ़ें।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम हर समय वुज़ू की हालत में रहते थे। आप "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ" बहुत धीमे स्वर में लगातार पढ़ते रहते थे। (एक रिवायत)

"अफसोस! हमने उनकी कद्र नहीं की। उनके आध्यात्मिक गुणों का वर्णन नहीं कर सकता। उनकी जीवन साधारण मनुष्य का जीवन नहीं था, बल्कि वे उन लोगों में से थे जो खुदा तआला के विशेष बंदे होते हैं और दुनिया में कभी-कभी आते हैं।" (सैयद मीर हसन साहब)

जैसे ही नमाज़ का समय होता, आप अदालत की पुकार को छोड़कर और अनुपस्थिति से होने वाले नुकसान की बिल्कुल परवाह न करते हुए खुदा तआला की हाज़िरी की पुकार पर तुरंत उपस्थित हो जाते। (एक रिवायत)

जहाँ ये मुकदमों की पैरवी केवल पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए थी, वहीं आपने इन मुकदमों के दौरान कभी नमाज़ क़ज़ा नहीं की और इस प्रकार खुदा तआला के हकों से संबंधित कर्तव्यों से कभी लापरवाह नहीं हुए। ठीक अदालत में ही नमाज़ के समय इस प्रकार व्यस्त हो जाते मानो आपको कोई और काम ही नहीं है। (एक रिवायत)

उसी एक सत्ता में पूरी तरह लीन हो जाने और उसकी इच्छा में राज़ी रहने की अवस्था हर समय आप पर छाई रहती थी। दिन हो या रात, एकांत हो या लोगों के बीच, उस सच्चे प्रिय की याद कभी दिल से दूर नहीं होती थी।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे सेवक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की खुदा तआला से प्रेम का ईमान बढ़ाने वाला वर्णन

रमज़ान मुबारक के अवसर पर जमात के सदस्यों को दुआओं की ओर विशेष ध्यान दिलाना

इन दिनों में विशेष रूप से कठिनाइयों और झूठे मुकदमों में फँसे अहमदियों के लिए बहुत अधिक दुआ करें। अहमदी भाइयों के लिए खुदा तआला आसानी पैदा करे। उम्मत-ए-मुस्लिम को भी दुआओं में याद रखें।

दुनिया को तबाही से बचाने के लिए भी दुआ करें। खुदा तआला मासूम लोगों को उनके अत्याचार से बचाए और यदि युद्ध और विनाश तय है तो खुदा तआला हमेशा निर्दोषों को उससे सुरक्षित रखे और अत्याचार करने वालों को पकड़े।

पृष्ठ 1 का शेष

वह धन तो खर्च करता था, अपने ऊँटों को भी ज़बह करता था, किन्तु भूख के दिनों में नहीं। अर्थात जब भूखों को आवश्यकता होती थी, तब वह ऐसा नहीं करता था। बल्कि जब उसे अपनी प्रसिद्धि का जुनून सवार होता, तो वह एक ही दिन में सैकड़ों ऊँट ज़बह कर देता।

हालाँकि यदि वह वास्तविक आवश्यकता को ध्यान में रखकर काम करता, तो मित्रों की दावत के लिए केवल एक ऊँट ज़बह करता और निन्यानवे ऊँट अनाथों और निर्धनों के लिए रख लेता, ताकि उन्हें भूख और कष्ट का सामना न करना पड़ता। अतः क्योंकि उसने सामूहिक आवश्यकता को ध्यान में नहीं रखा और अपने धन को अनुचित समय पर खर्च करके नष्ट कर दिया, इसलिए हमारी दृष्टि में वह किसी प्रशंसा के योग्य नहीं है, और न ही इस योग्य है कि लोग उसे सम्मान की दृष्टि से देखें।

यहाँ "यतीमन ज़ा मक़रबतिन" (निकट संबंधी अनाथ) के शब्द इसलिए जोड़े गए हैं कि संबंधी अनाथ को तो हर हाल में मनुष्य को अपने पास रखना पड़ता है और उसके भोजन, शिक्षा, वस्त्र आदि के खर्चों की जिम्मेदारी भी उठानी पड़ती है। यह अलग बात है कि कोई व्यक्ति इन खर्चों को स्वेच्छा से वहन करे या अनिच्छा से, किन्तु पारिवारिक जिम्मेदारियाँ यह अपेक्षा करती हैं कि मनुष्य अपने संबंधी अनाथ का ध्यान रखे। परन्तु कहा गया कि तुम्हारी तो यह अवस्था है कि तुम ऐसे अनाथ को भी भोजन नहीं कराते जो तुम्हारा निकट संबंधी होता है। यह इस बात का प्रमाण है कि तुम्हारी स्थिति अत्यंत गिर चुकी है।

इस आयत का यह अर्थ नहीं कि केवल निकट संबंधी अनाथ को ही भोजन कराना चाहिए और अन्य को नहीं, बल्कि इसका अभिप्राय यह है कि किसी अन्य अनाथ की परवरिश तो दूर रही, तुमसे तो यह आशा भी नहीं की जा सकती कि तुम अपने निकट संबंधी अनाथों की ही देखभाल करोगे और उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखोगे। जब तुम एक निकट जिम्मेदारी से ही इतने लापरवाह हो, तो दूर की जिम्मेदारी को पूरा करने की ओर तुम्हारा ध्यान कैसे जा सकता है।

(तफ़सीर कबीर, खंड 8, पृष्ठ 624, प्रकाशित क़ादियान)

★ ★ ★

जमाअत अहमदिया तीमापुर (कर्नाटक) में आमीन समारोह

3 फ़रवरी को जमाअत अहमदिया तीमापुर में एक प्रशिक्षण बैठक आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता मक़रम सैयद अयाज़ अहमद साहिब, सदर जमाअत ने की। तिलावत और नज़्म के बाद मक़रम रफ़ीक़ुज़्ज़मान साहिब, मुर्बी दावत इलल्लाह, मक़रम तैय्यब अहमद ख़ान साहिब, मुबल्लिग इंचार्ज ज़िला यादगीर, तथा मक़रम मुहम्मद शहाबुद्दीन साहिब, नायब नाज़िर बैतुल माल आमद ने भाषण दिए।

इस अवसर पर चार बच्चों की बिस्मिल्लाह (क़ुरआन पढ़ाई की शुरुआत) की रस्म हुई, जिनके नाम इस प्रकार हैं:

(1) अज़ीज़ वजाहत अहमद
(2) अज़ीज़ अमर अहमद अजब शेर
(3) अज़ीज़ ग़नी अहमद अजब शेर
(4) अज़ीज़ा तूबा आफरीन

इसी प्रकार तीन बच्चियों की आमीन की रस्म हुई, जिनके नाम इस प्रकार हैं:

(1) अज़ीज़ा सायरा सलीम (पूर्ण अनुवाद सहित)
(2) अज़ीज़ा सिदरा सलीम (पूर्ण अनुवाद सहित)
(3) अज़ीज़ा सबीका (पूर्ण अनुवाद सहित)

अल्लाह तआला इन बच्चों को क़ुरआन मजीद की बरकतों से हिस्सा प्रदान करे और अपनी व्यवहारिक ज़िंदगी में इसकी शिक्षाओं को अपनाने की तौफ़ीक़ दे। आमीन।

(मुहम्मद नसीरुल हक़, मुबल्लिग़ सिलसिला तीमापुर व कर्नाटक)

★ ★ ★

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ि. जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

अबूतालिब के पास मक्का के काफ़िरों की शिकायत और हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) का दृढ़संकल्प

मक्का वालों को जब ये शिक्षाएँ बार-बार सुनाई जाने लगीं तो एक दिन मक्का के सरदार लोग एकत्र होकर आप के चाचा अबूतालिब के पास आए और उन से कहा कि आप हमारे सरदार हैं तथा आपके कारण हमने आपके भतीजे मुहम्मद (स.अ.व.) को कुछ नहीं कहा। अब समय आ गया है कि आप के साथ हम अन्तिम निर्णय करें। या तो आप उसे समझाएँ और उस से पूछें कि वास्तव में वह हम से चाहता क्या है। यदि उसकी इच्छा सम्मान प्राप्त करने की है तो हम उसे अपना सरदार बनाने के लिए तैयार हैं, यदि वह धन का इच्छुक है तो हम में प्रत्येक व्यक्ति अपने धन का कुछ भाग उसे देने के लिए तैयार है, यदि उसे विवाह की अभिलाषा है तो मक्का की प्रत्येक लड़की जो उसे पसन्द हो उसका नाम ले हम उस से उस का विवाह कराने के लिए तैयार है। हम उसके बदले में उस से कुछ नहीं चाहते और न ही किसी अन्य बात से रोकते हैं। हम केवल इतना चाहते हैं कि वह हमारी मूर्तियों को बुरा कहना छोड़ दे। वह निःसंदेह कहे कि ख़ुदा एक है, परन्तु यह न कहे कि हमारी मूर्तियाँ बुरी हैं। यदि वह इतनी बात स्वीकार कर ले तो हमारी उसकी मैत्री हो जाएगी। आप उसे समझाएं तथा हमारे प्रस्ताव के स्वीकार करने पर तैयार करें अन्यथा फिर दो बातों में से एक होगी या आप को अपना भतीजा छोड़ना पड़ेगा या आपकी जाति आप की सरदारी से इन्कार करके आप को छोड़ देगी। अबू तालिब को यह बात नितान्त असहनीय थी। अरबों के पास रुपया-पैसा तो थोड़ा ही होता था, उनकी समस्त प्रसन्नता उनकी सरदारी में होती थी। सरदार जाति के लिए जीवित रहते थे और जाति सरदारों के लिए जीवित रहती थी। अबू तालिब यह बात सुनकर व्याकुल हो गए। मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को बुलवाया और कहा हे मेरे भतीजे ! मेरी जाति के लोग मेरे पास आए हैं और उन्होंने मुझे यह सन्देश दिया है और साथ ही उन्होंने मुझे यह भी कह दिया है कि यदि तुम्हारा भतीजा इन बातों में से किसी एक बात पर भी सहमत न हो जबकि हमारी ओर से हर प्रकार के प्रस्ताव रखे जा चुके हैं, यदि वह इस पर भी अपने मार्ग से नहीं हटता तो आप का काम है कि उसे छोड़ दें और यदि आप उसे छोड़ने के लिए तैयार न हों तो फिर हम लोग आपकी सरदारी से इन्कार करके आपको छोड़ देंगे। जब अबू तालिब ने यह बात की तो उनकी आँखों में आँसू आ गए, उनके आँसुओं को देखकर रसूल करीम (स.अ.व.) की आँखों में भी आँसू आ गए तथा आप ने फ़रमाया हे मेरे चाचा ! मैं यह नहीं कहता कि आप अपनी जाति को छोड़ दें और मेरा साथ दें आप निःसंदेह मेरा साथ छोड़ दें और अपनी जाति के साथ मिल जाएँ परन्तु मुझे उस एक ख़ुदा की सौगन्ध है कि यदि सूर्य को मेरे दाएँ और चन्द्रमा को मेरे बाएँ लाकर खड़ा कर दें तब भी मैं अपने ख़ुदा के एकेश्वरवाद का उपदेश देने से रुक नहीं सकता। मैं अपने कार्य में कार्यरत रहूँगा जब तक कि ख़ुदा मुझे मृत्यु न दे दे। आप अपना हित स्वयं देख लें। यह ईमान और निष्कपटता से परिपूर्ण उत्तर अबू तालिब के नेत्र खोलने के लिए पर्याप्त था। उन्होंने समझ लिया कि यद्यपि मुझे ईमान लाने का सामर्थ्य प्राप्त नहीं हुआ परन्तु उस ईमान का दृश्य देखने का सामर्थ्य प्राप्त होना सब दौलतों से बड़ी दौलत है। आपने कहा हे मेरे भतीजे ! जा और अपना कर्त्तव्य पालन करता रह। यदि मेरी जाति मुझे छोड़ना चाहती है तो निःसंदेह छोड़ दे। मैं तुझे नहीं छोड़ सकता।[1]

हबशा की ओर प्रवास (हिजरत)

जब मक्का वालों का अत्याचार चरम सीमा को पहुँच गया तो मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने एक दिन अपने साथियों को बुलाया और फ़रमाया पश्चिम की ओर समुद्र पार एक देश है जहाँ ख़ुदा की उपासना के कारण अन्याय नहीं किया जाता, धर्म परिवर्तन के कारण लोगों का वध नहीं किया जाता। वहाँ एक न्यायप्रिय राजा है। तुम लोग प्रवास करके वहाँ चले जाओ कदाचित तुम्हारे लिए सुगमता का मार्ग निकल आए। कुछ मुसलमान पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे आपके आदेश पर एबीसीनिया की ओर चले गए। इन लोगों का मक्का से निकलना कोई साधारण बात न थी। मक्का के लोग स्वयं को का'बा का न्यासी (TRUSTEE) समझते थे तथा उनके लिए मक्का से बाहर चला जाना एक असहनीय आघात था। यह बात वही व्यक्ति कह सकता था जिसके लिए संसार में अन्य कोई ठिकाना शेष न रहे। अतः इन लोगों के लिए निकलना नितान्त हृदय विदारक घटना थी। फिर इन लोगों का निकलना भी गुप्त रूप से हुआ, क्योंकि वे जानते थे कि यदि मक्का वालों को मालूम हो गया तो वे हमें निकलने नहीं देंगे। इस कारण वे अपने परिजनों और प्रियजनों की अन्तिम भेंट से भी वंचित हो कर जा रहे थे, उनके हृदयों की जो दशा थी वह तो थी ही, उनको देखने वाले भी उनकी पीड़ा से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। अतः जिस समय यह काफ़िला निकल रहा था, हज़रत उमर रज़ि. जो उस समय एक काफ़िर तथा इस्लाम के कट्टर शत्रु थे और मुसलमानों को कष्ट पहुँचाने वालों में से सर्वप्रमुख व्यक्ति थे। संयोगवश उस क़ाफ़िले के कुछ लोगों को मिल गए। उनमें एक सहाबिया उम्मे अब्दुल्लाह नामक भी थीं। बंधे हुए सामान और तैयार सवारियों को जब आप ने देखा तो आप समझ गए कि ये लोग मक्का छोड़ कर जा रहे हैं। आपने कहा उम्मे अब्दुल्लाह ये तो प्रवास के सामान दिखाई दे रहे हैं। उम्मे अब्दुल्लाह कहती हैं मैंने उत्तर में कहा हाँ ख़ुदा की सौगन्ध हम किसी अन्य देश में चले जाएँगे, क्योंकि तुम ने हमें बहुत दुःख दिए हैं और बहुत अत्याचार किए हैं। हम उस समय तक अपने देश में नहीं लौटेंगे जब तक ख़ुदा तआला हमारे लिए कोई साधन पैदा न कर दे। उम्मे अब्दुल्लाह वर्णन करती हैं कि उमर रज़ि. ने कहा अच्छा ख़ुदा तुम्हारे साथ हो और मैंने उनके स्वर में हृदय की आर्द्रता महसूस की जो इससे पहले मैंने कभी महसूस नहीं की थी, फिर वह बड़ी शीघ्रता से मुख फेर कर चले गए। मैंने महसूस किया कि इस दृश्य से उनकी तबियत नितान्त संतप्त हो गई है। जब इन लोगों के प्रवास की सूचना मक्का वालों को मिली तो उन्होंने इनका पीछा किया और समुद्र तक इन के पीछे गए, परन्तु लोगों के समुद्र तक पहुँचने से पूर्व ही वह क़ाफ़िला हबशा की ओर कूच कर चुका था, परन्तु जब मक्का वालों को यह मालूम हुआ तो उन्होंने निर्णय किया कि एक प्रतिनिधि मंडल हबशा के राजा के पास भेजा जाए जो उसे मुसलमानों के विरुद्ध भड़काए और उसे प्रेरित करे कि वह मुसलमानों को मक्का वालों के सुपुर्द कर दे। ताकि वे उन्हें उनकी इस धृष्टता का दण्ड दें। इस प्रतिनिधिमंडल में उमर बिन अलआस भी थे जो बाद में मुसलमान हो गए थे तथा मिस्र उन्हीं के द्वारा विजय हुआ था। यह प्रतिनिधिमंडल हबशा गया और राजा से मिला, सरदारों और साहित्कारों को इन्होंने ख़ूब उकसाया, परन्तु अल्लाह तआला ने हबशा के राजा के हृदय को दृढ़निश्चयी बना दिया था। उसने इन लोगों के तथा दरबारियों के आग्रह के बावजूद मुसलमानों को काफ़िरों के सुपुर्द करने से इन्कार कर दिया। जब वह प्रतिनिधिमंडल असफल वापस आया तो मक्का वालों ने इन मुसलमानों को बुलाने के लिए एक अन्य उपाय सोचा और वह यह कि हबशा जाने वाले कुछ क़ाफ़िलों में एक समाचार फैला दिया कि मक्का के सब लोग मुसलमान हो गए हैं। जब यह समाचार हबशा पहुँचा तो अधिकांश मुसलमान प्रसन्नता से मक्का की ओर वापस लौटे, परन्तु उन्हें मक्का पहुँच कर ज्ञात हुआ कि यह समाचार मात्र हानि पहुँचाने की भावना से फैलाया गया था तथा इसमें कोई वास्तविकता न थी। इस पर कुछ लोग तो वापस हबशा चले गए और कुछ मक्का में ठहर गए। इन मक्का में ठहरने वालों में उसमान बिन मज़ऊन भी थे जो मक्का के एक बहुत बड़े सरदार के बेटे थे। इस बार उन के पिता के एक मित्र वलीद बिन मुग़ीरह ने उन्हें शरण दी और वह अमन से मक्का में रहने लगे, परन्तु इस अवधि में उन्होंने देखा कि कुछ अन्य मुसलमानों को दुःख दिए जाते हैं तथा उन्हें कठोर यातनाएँ दी जाती हैं। चूंकि वह स्वाभिमानी नौजवान थे वलीद के पास गए और उसे कह दिया कि मैं आप की शरण को वापस करता हूँ; क्योंकि मुझ से नहीं देखा जाता कि दूसरे मुसलमान यातनाएँ सहन करें और मैं आराम से रहूँ। अतः वलीद ने घोषणा कर दी कि उस्मान अब मेरी शरण में नहीं। इसके पश्चात् एक दिन लबीद अरब का प्रसिद्ध कवि मक्का के सरदारों में बैठा अपने शे'र सुना रहा था कि उस ने शे'र का एक भाग पढ़ा

كُلُّ نَعِيمٍ لَا مَحَالَةَ زَائِلُ

जिसका अर्थ यह है कि प्रत्येक ने'मत अन्ततः नष्ट हो जाने वाली है। उसमान^{रज़ि.} ने कहा यह ग़लत है स्वर्ग की ने'मतें हमेशा स्थिर रहेंगी। लबीद एक बड़ा आदमी था, यह उत्तर सुनकर आक्रोश में आ गया तथा उसने कहा हे क़ुरैश के लोगो ! तुम्हारे अतिथि को तो पहले इस प्रकार अपमानित नहीं किया जा सकता था अब यह नई रीति कब से प्रारम्भ हुई है। इस पर एक व्यक्ति ने कहा कि यह एक मूर्ख व्यक्ति है इसकी बात की परवाह न करें। हज़रत उसमान ने अपनी बात पर आग्रह किया और कहा कि मूर्खता की क्या बात है, मैंने जो बात कही है वह सत्य है। इस पर उस व्यक्ति ने उठ कर आप के मुख पर इतने ज़ोर से घूँसा मारा कि आप की एक आँख बाहर निकल गई। वलीद उस समय उस सभा में बैठा हुआ था। उसमान के पिता के साथ उस की घनिष्ठ मित्रता थी। अपने स्वर्गीय मित्र के बेटे की यह दशा उस से देखी न गई, परन्तु मक्का की प्रथा के अनुसार जब उसमान उसकी शरण में नहीं थे तो वह उनकी सहायता भी नहीं कर सकता था। अतः और कुछ तो न कर सका, नितान्त दुःख से उसमान ही को सम्बोधित करके बोला हे मेरे भाई के बेटे! ख़ुदा की सौगन्ध तेरी यह आँख इस आघात से सुरक्षित रह सकती थी जब कि तू एक शक्तिशाली सुरक्षा में था (अर्थात् मेरी शरण में था) परन्तु तूने स्वयं ही उस शरण को छोड़ दिया और यह दिन देखा। उसमान ने उत्तर में कहा मेरे साथ जो कुछ हुआ है मैं स्वयं उसका अभिलाषी था। तुम मेरी फूटी हुई आँख पर शोक कर रहे हो, हालांकि मेरी स्वस्थ आँख इस बात के लिए तड़प रही है कि जो मेरी बहन के साथ हुआ है वही मेरे साथ क्यों नहीं होता। मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) का आदर्श मेरे लिए पर्याप्त है। यदि वह कष्ट उठा रहे हैं तो मैं क्यों न उठाऊँ। मेरे लिए ख़ुदा की सहायता पर्याप्त है।

हज़रत उमर^{रज़ि.} का इस्लाम स्वीकार करना

उसी युग में मक्का में एक घटना हुई जिसने मक्का में सनसनी फैला दी और वह घटना इस प्रकार हुई कि उमर जो बाद में इस्लाम के दूसरे ख़लीफ़ा हुए और जो इस्लाम के प्रारम्भिक युग में कट्टर शत्रुओं में से थे। एक दिन बैठे-बैठे उनके हृदय में यह विचार पैदा हुआ कि इस समय तक इस्लाम को मिटाने के लिए भरसक प्रयत्न किए गए हैं परन्तु सफलता नहीं मिली। क्यों न इस्लाम के प्रवर्तक का ही काम तमाम करके इस झंझट का ही हमेशा के लिए अन्त कर दिया जाए!! यह विचार आते ही तलवार उठाई और घर से निकल पड़े और आंहज़रत (स.अ.व.) को खोजने लगे। मार्ग में उनका मित्र मिला और उन्हें इस अवस्था में देखकर कुछ आश्चर्यचकित हुआ और आप से प्रश्न किया कि उमर कहाँ जा रहे हो? उमर ने कहा मैं मुहम्मद (स.अ.व.) को मारने के लिए जा रहा हूँ। उसने कहा तुम मुहम्मद (स.अ.व.) का वध करके मुहम्मद (स.अ.व.) के क़बीले से सुरक्षित रह सकोगे ? पहले अपने घर की तो ख़बर लो। तुम्हारी बहन और बहनोई दोनों मुसलमान हो चुके हैं। यह समाचार हज़रत उमर के सर पर बिजली की भांति गिरा। उन्होंने सोचा मैं जो इस्लाम का कट्टर शत्रु हूँ, मैं जो मुहम्मद (स.अ.व.) को मारने के लिए जा रहा हूँ और मेरी ही बहन और मेरा ही बहनोई इस्लाम स्वीकार कर चुके हैं। यदि ऐसा है तो पहले मुझे अपनी बहन और बहनोई से निपटना चाहिए। यह सोचते हुए वह अपनी बहन के घर की ओर चल पड़े। जब वह द्वार पर पहुँचे तो उन्हें अन्दर से सुरीली आवाज़ में किसी पवित्र वाणी के पढ़ने की आवाज़ें आईं। यह पढ़ने वाले ख़ुबाब^{रज़ि.} थे जो उनकी बहन और बहनोई को क़ुर्आन करीम सिखा रहे थे। उमर ने तेज़ी से घर में प्रवेश किया। उनके पैरों की आहट सुन कर ख़ुबाब^{रज़ि.} तो किसी कोने में छुप गए तथा उनकी बहन ने जिनका नाम फ़ातिमा था क़ुर्आन करीम के वे पन्ने जो उस समय पढ़े जा रहे थे छुपा दिए। हज़रत उमर ने जब कमरे में प्रवेश किया तो क्रोध से पूछा। मैंने सुना है कि तुम अपने धर्म से विमुख हो गए हो और यह कह कर अपने बहनोई पर जो उनके चाचा के बेटे भी थे आक्रमण कर बैठे। फ़ातिमा^{रज़ि.} ने जब देखा कि उनके भाई उमर^{रज़ि.} उनके पति पर आक्रमण करने लगे हैं तो वह दौड़कर अपने पति के आगे खड़ी हो गईं। उमर^{रज़ि.} हाथ उठा चुके थे उनका हाथ ज़ोर से उनके बहनोई के मुख की ओर जा रहा था और अब उस हाथ को रोकना उनकी शक्ति से बाहर था। परन्तु अब उनके हाथ के सामने उनके बहनोई की बजाए उनकी बहन का चेहरा था। उमर^{रज़ि.} का हाथ ज़ोर से फ़ातिमा^{रज़ि.} के चेहरे पर पड़ा और फ़ातिमा^{रज़ि.} की नाक से रक्त की धारा बहने लगी। फ़ातिमा^{रज़ि.} ने मार तो सहन कर ली परन्तु निडरतापूर्वक कहा उमर ! यह सत्य है कि हम मुसलमान हो चुके हैं और याद रखिए कि हम अपने उस धर्म को नहीं छोड़ सकते। आप से जो कुछ हो सकता है कर लें। उमर^{रज़ि.} एक बहादुर व्यक्ति थे। अत्याचार ने उनकी बहादुरी को मिटा नहीं दिया था। एक स्त्री और फिर अपनी बहन को अपने ही हाथ से घायल देखा तो लज्जा और शर्म से घड़ों पानी पड़ गया, बहन के चेहरे से रक्त बह रहा था और अब उमर^{रज़ि.} के हृदय से उन का क्रोध दूर हो चुका था, अपनी बहन से क्षमा माँगने की इच्छा प्रबल होती जा रही थी अन्य तो कोई बहाना न सूझा, बहन से बोले अच्छा ! लाओ मुझे वह वाणी तो सुनाओं जो तुम लोग अभी पढ़ रहे थे। फ़ातिमा^{रज़ि.} ने कहा मैं नहीं दिखाऊँगी क्योंकि आप उन पन्नों को नष्ट कर देंगे। उमर^{रज़ि.} ने कहा नहीं बहन मैं ऐसा नहीं करूँगा। फ़ातिमा^{रज़ि.} ने कहा आप तो अपवित्र हैं। पहले स्नान करें।

फिर दिखाऊँगी। उमर^{रज़ि.} अतीव लज्जा के कारण सब कुछ करने के लिए तैयार थे, वह स्नान करने पर भी सहमत हो गए। जब स्नान करके वापस आए तो फ़ातिमा ने उनके हाथ में क़ुर्आन करीम के पन्ने दे दिए। ये क़ुर्आन करीम के पन्ने सूरह 'ताहा' की कुछ आयतें थीं। जब वह उसे पढ़ते हुए इस आयत पर पहुँचे

اِنَّنِیۡۤ اَنَا اللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعۡبُدۡنِیۡ ۙ وَ اَقِمِ الصَّلٰوۃَ لِذِکۡرِیۡ اِنَّ السَّاعَۃَ اٰتِیَۃٌ
اَکَادُ اُخۡفِیۡہَا لِتُجۡزٰی کُلُّ نَفۡسٍۭ بِمَا تَسۡعٰی

(सूरह ताहा 15-16)

निश्चय ही मैं अल्लाह हूँ, मेरे सिवा अन्य कोई उपास्य नहीं। अतः हे सम्बोध्य ! मेरी उपासना कर और नमाज़ पढ़ और अपने दूसरे साथियों के साथ मिलकर मेरी उपासना को शाश्वत स्थिर रूप दे। परम्परागत ही उपासना नहीं अपितु मेरी बड़ाई को संसार में स्थापित करने वाली उपासना। स्मरण रख कि इस वाणी को स्थापित करने वाली घड़ी आ रही है। मैं उसे प्रकट करने के साधन पैदा कर रहा हूँ जिनका परिणाम यह होगा कि प्रत्येक प्राण को जैसे-जैसे वह कार्य करता है उसके अनुसार बदला मिल जाएगा।

हज़रत उमर^{रज़ि.} जब इस आयत पर पहुँचे तो सहसा उनके मुख से निकल गया कि यह कैसा अद्भुत और पवित्र कलाम है। ख़ुबाब^{रज़ि.} ने जब ये शब्द सुने तो वह उस स्थान से जहाँ वह छुपे हुए थे बाहर निकल आए और कहा कि रसूले करीम (स.अ.व.) की दुआ का ही परिणाम है। मुझे ख़ुदा की सौगन्ध मैंने कल ही आप को यह दुआ करते सुना था कि हे मेरे ख़ुदा ! उमर बिन ख़त्ताब या उमर बिन-हिशाम में से किसी एक का इस्लाम की ओर अवश्य मार्ग-दर्शन कर। उमर^{रज़ि.} खड़े हो गए और कहा मुझे बताओ कि मुहम्मद (स.अ.व.) कहाँ हैं। जब आप को बताया गया कि आप 'दारे अरक़म' में रहते हैं तो आप उसी प्रकार नंगी तलवार लिए हुए वहाँ पहुँचे और द्वार खटखटाया। सहाबा ने द्वार की दराड़ों में से देखा तो उन्हें उमर नंगी तलवार लिए खड़े दिखाई दिए। वे डरे कि कहीं ऐसा न हो कि द्वार खोल दें तो उमर अन्दर आकर कोई उत्पात करें, परन्तु रसूले करीम (स.अ.व.) ने फ़रमाया हुआ क्या? द्वार खोल दो। उमर ने उसी प्रकर तलवार लिए अन्दर प्रवेश किया। रसूले करीम (स.अ.व.) आगे बढ़े और फ़रमाया उमर ! किस इरादे से आए हो ? उमर ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! मैं मुसलमान होने आया हूँ। रसूले करीम (स.अ.व.) ने यह सुन कर ऊँचे स्वर में कहा अल्लाहो अकबर अर्थात् अल्लाह सब से महान है और आप के सब साथियों ने भी यही शब्द ज़ोर से दोहराए, यहाँ तक कि मक्का की पहाड़ियाँ गूंज उठीं और थोड़ी देर में यह ख़बर मक्का में दवानल की भांति फैल गई। तदुपरान्त उमर^{रज़ि.} से भी वही कठोरता का व्यवहार आरम्भ हो गया जो पहले अन्य सहाबा^{रज़ि.} से होता था, परन्तु वही उमर^{रज़ि.} जो पहले मारने और वध करने में आनन्द लेते थे अब मार खाने और पीटे जाने में आनन्द प्राप्त करने लगे। अतः स्वयं उमर^{रज़ि.} का बयान है कि ईमान लाने के पश्चात् मक्का की गलियों में मारें ही खाता रहता था।

शेष

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 09 April 2026 Issue No. 15

Act. MANAGER :
ATHAR AHMAD SHAMIM
Mobile : +91-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

{25} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। मुझसे हज़रत वालिदा साहिबा ने बयान किया कि जब मिर्ज़ा फ़ज़ल अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो का देहांत हुआ, तो उसके कुछ समय बाद हज़रत साहिब ने मुझसे फ़रमाया कि तुम्हारी संतान के साथ जायदाद का हिस्सा बाँटने वाला एक फ़ज़ल अहमद ही था, सो वह बेचारा भी गुजर गया।

ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि हमारे दादा साहिब के दो बेटे थे एक हज़रत साहिब, जिनका नाम मिर्ज़ा गुलाम अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो था, और दूसरे हमारे ताया मिर्ज़ा गुलाम क़ादिर साहिब, जो हज़रत साहिब से बड़े थे। हमारे दादा ने क़ादियान की ज़मीन में दो गाँव बसाकर उन्हें अपने बेटों के नाम पर रखा था। एक का नाम क़ादिराबाद रखा और दूसरे का अहमदाबाद। अहमदाबाद बाद में किसी तरह हमारे परिवार के हाथ से निकल गया और केवल क़ादिराबाद रह गया।

फिर क़ादिराबाद हज़रत साहिब की संतान में बाँटा गया और उसी में मिर्ज़ा सुल्तान अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो का हिस्सा आया। लेकिन ख़ुदा की क़ुदरत से अब लगभग चालीस वर्ष के बाद अहमदाबाद, जो हमारे परिवार के हाथ से निकलकर दूसरे लोगों के पास चला गया था, वापस हमारे पास आ गया है और अब वह पूरी तरह केवल हम तीन भाइयों के पास है, अर्थात मिर्ज़ा सुल्तान अहमद साहिब का उसमें कोई हिस्सा नहीं है।

और ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि क़ादिराबाद क़ादियान के पूर्व की ओर स्थित है और अहमदाबाद उत्तर दिशा में है।

{26} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। हमसे डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब ने बयान किया (जो ख़ाकसार के सगे मामू हैं) कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लुधियाना में मसीह होने का दावा प्रकाशित किया, तो उन दिनों मैं छोटा बच्चा था और शायद तीसरी कक्षा में पढ़ता था। मुझे इस दावे की कोई जानकारी नहीं थी।

एक दिन मैं मदरसे गया तो कुछ लड़कों ने मुझसे कहा कि क़ादियान के जो मिर्ज़ा साहिब तुम्हारे घर में हैं, उन्होंने यह दावा किया है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का देहांत हो चुका है और आने वाले मसीह वही स्वयं हैं।

डॉक्टर साहिब कहते थे कि मैंने इसका विरोध किया और कहा कि यह कैसे हो सकता है? हज़रत ईसा तो जीवित हैं और आसमान से उतरेंगे।

जब मैं घर आया तो हज़रत साहिब बैठे हुए थे। मैंने आपसे कहा कि मैंने सुना है कि आप कहते हैं कि आप मसीह हैं।

डॉक्टर साहिब कहते हैं कि मेरा यह प्रश्न सुनकर हज़रत साहिब शांति से उठे और कमरे में अलमारी से अपनी नई पुस्तक "फ़तह इस्लाम" की एक प्रति लाकर मुझे दी और फ़रमाया इसे पढ़ो।

डॉक्टर साहिब कहते थे कि यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का प्रमाण है कि आपने एक छोटे बच्चे के साधारण प्रश्न पर भी इतनी गंभीरता से ध्यान दिया, अन्यथा कोई व्यक्ति यूँ ही कोई बात कहकर टाल देता।

{27} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। हमसे क़ाज़ी अमीर हुसैन साहिब ने बयान किया कि मैं हदीस में पढ़ता था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाल सहाबा बरकत के लिए रखते थे। इसी विचार से मैंने एक दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि हुज़ूर! मुझे भी अपने कुछ बाल प्रदान करें।

चुनाँचे जब आपने बाल कटवाए तो अपने बाल मुझे भिजवा दिए। ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि मेरे पास भी हज़रत साहिब के कुछ बाल सुरक्षित हैं।

{28} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। हमसे क़ाज़ी अमीर हुसैन साहिब ने बयान किया कि एक बार जब मौलवी साहिब (हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूर्व के प्रथम ख़लीफ़ा का संकेत) क़ादियान से बाहर गए हुए थे, तो मैं मग़रिब की नमाज़ में आया और देखा कि आगे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम स्वयं नमाज़ पढ़ा रहे थे।

क़ाज़ी साहिब कहते हैं कि आपने छोटी-छोटी दो सूरतें पढ़ीं, लेकिन दर्द और प्रभाव के कारण लोगों की आवाज़ें निकल रही थीं।

जब नमाज़ समाप्त हुई, तो मैं आगे बढ़ा। मुझे देखकर आपने फ़रमाया क़ाज़ी साहिब! मैंने आपको बहुत खोजा, लेकिन आप नहीं मिले। मुझे इस नमाज़ में बहुत कठिनाई हुई है। आप इशा की नमाज़ पढ़ाएँ।

ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि यह प्रारंभिक समय की बात होगी।

{29} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। मुझसे मौलवी शीर अली साहिब ने बयान किया कि जिन दिनों हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का करम दीन के साथ गुरदासपुर में मुकदमा चल रहा था और आप वहाँ गए हुए थे, एक दिन ऐसा हुआ कि सब लोग कचहरी चले गए या इधर-उधर हो गए और हज़रत साहिब के पास केवल मैं और मुफ़्ती सादिक़ साहिब रह गए।

हज़रत साहिब लेटे हुए थे और ऐसा लगता था कि सो रहे हैं। इसी अवस्था में आपने सिर उठाया और कहा मुझे इल्हाम हुआ है, लिख लो।

संयोग से उस समय वहाँ कोई कलम-दवात या पेंसिल नहीं थी। अंत में हम रसोईघर से कोयला लाए और उससे मुफ़्ती साहिब ने कागज़ पर लिखा। फिर आप उसी प्रकार लेट गए। थोड़ी देर बाद फिर आपने इल्हाम लिखवाया। इस प्रकार उस समय आपने कई इल्हाम लिखवाए।

मौलवी साहिब कहते हैं कि उनमें से एक इल्हाम मुझे याद है:

"يسئلونك عن شأنك قل الله ثم ذرهم فى خوضهم يلعبون"

अर्थात तेरी शान के बारे में पूछेंगे, तो कह दे "अल्लाह", फिर उन्हें उनकी व्यर्थ बातों में छोड़ दे।

दूसरे दिन जब आप अदालत में उपस्थित हुए, तो वकील ने अन्य प्रश्नों के साथ यह प्रश्न भी किया कि आपने अपनी पुस्तक "तहफ़्फ़ा गोलड़विया" में अपने बारे में जो लिखा है और उसने पुस्तक से एक अंश पढ़कर सुनाया क्या आप वास्तव में अपनी ऐसी ही महानता समझते हैं?

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया हाँ, यह अल्लाह का फ़ज़ल है (या इसी प्रकार का कोई वाक्य कहा जिसमें बात को अल्लाह की ओर सम्बंधित किया)।

मौलवी साहिब कहते हैं कि उस समय हज़रत साहिब को ध्यान नहीं आया कि यह प्रश्न और उत्तर आपके इल्हाम के अनुसार था।

जब आप गुरदासपुर से क़ादियान लौट रहे थे, तो रास्ते में मैंने आपसे कहा कि मुझे लगता है कि आपका वह इल्हाम इस प्रश्न और उत्तर में पूरा हुआ है।

हज़रत साहिब बहुत प्रसन्न हुए और फ़रमाया हाँ, वास्तव में यही है, तुमने बिल्कुल ठीक समझा है।

बाद में शेख याक़ूब अली इर्फ़ानी साहिब ने भी बताया कि हज़रत साहिब इस बात का उल्लेख करते हुए कहते थे कि मौलवी शीर अली ने इस इल्हाम का अर्थ बहुत अच्छी तरह समझा है और प्रसन्नता व्यक्त करते थे।

(इस रिवायत में जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तक "तहफ़्फ़ा गोलड़विया" का उल्लेख है, उसके बारे में यह उल्लेखनीय है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने "हक़ीक़तुल वह्य" में "तहफ़्फ़ा गोलड़विया" के स्थान पर "तिर्याकुल क़ुलूब" का नाम लिखा है। लेकिन वास्तव में यह भूल है और सही यह है कि अदालत में जिस पुस्तक के बारे में पूछा गया था, वह "तहफ़्फ़ा गोलड़विया" ही थी, न कि "तिर्याकुल क़ुलूब", जैसा कि भाग द्वितीय की रिवायत संख्या 389 में अदालत के अभिलेख से सिद्ध किया जा चुका है।)

{30} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आदत थी कि हर व्यक्ति के सपनों को ध्यान से सुनते थे और कई बार उन्हें लिख भी लेते थे।

एक बार जब मिर्ज़ा कमालुद्दीन आदि ने मस्जिद के नीचे का रास्ता दीवार बनाकर बंद कर दिया था और अहमदियों को कठिनाई हो रही थी, और आपको मजबूर होकर कानूनी कार्रवाई करनी पड़ी थी (इसके अतिरिक्त आपने कभी किसी के विरुद्ध स्वयं मुकदमा दायर नहीं किया), मैंने सपना देखा कि वह दीवार गिराई जा रही है और मैं उसके गिरे हुए हिस्से पर से गुजर रहा हूँ।

मैंने यह सपना आपको बताया। आपने ध्यान से सुना और उसे लिख लिया। उस समय मैं बिल्कुल छोटा बच्चा था।

{31} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि जब 1905 का बड़ा भूकंप आया था और आप बाग में रहने चले गए थे, तो मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब के बेटे मुहम्मद मंज़ूर ने, जो उस समय बच्चा था, सपना देखा कि बहुत से बकरे ज़बह किए जा रहे हैं।

जब यह बात हज़रत साहिब को बताई गई, तो आपने कई बकरे मँगवाकर सदक़ा करवा दिया, और आपके अनुकरण में अन्य लोगों ने भी ऐसा ही किया। मेरा अनुमान है कि उस

शेष पृष्ठ 8 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad